नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Nigeria Ki Lok Kathayen-1 (Folktales of Nigeria-1)
Cover Page picture : Nigerian Art
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
To read many such stories : https://www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Nigeria

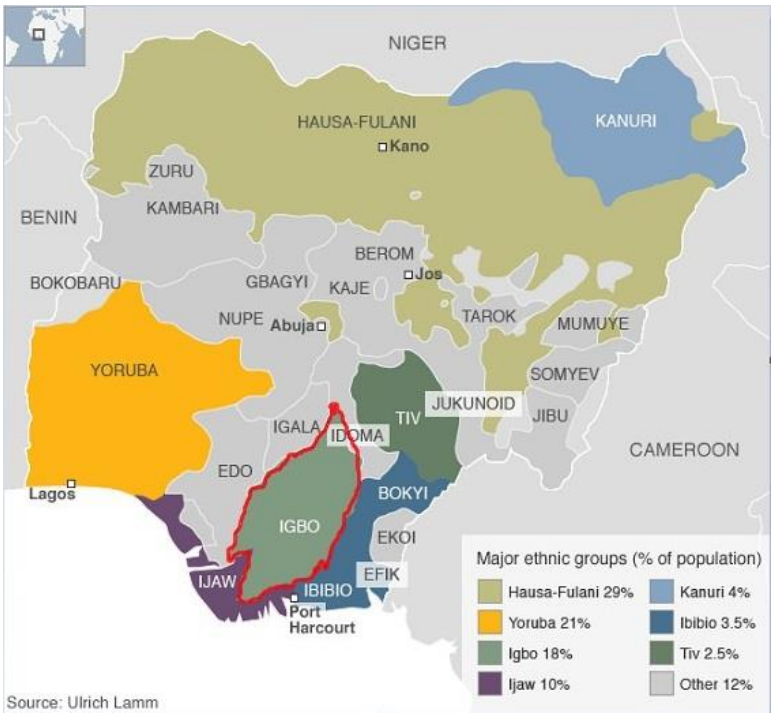

विंडसर, कैनेडा

फरवरी 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4
नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1 5
1 एक उदास राजा और उसका उदास राज्य 7
2 खोया हुआ वारिस 12
3 लैचकी राजकुमार 17
4 बॉसुरी 30
5 जादुई काशीफल 39
6 लड़की, मेंढक और सरदार का बेटा 46
7 जुयिन गाटान फ़ारा 54
8 कुत्ता और शेर 62
9 मास्टर आदमी 64
10 चिन्ये 75

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुॅचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक 1200 से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से 400 से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहॉ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब 95 प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई 2018

नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1

नाइजीरिया देश अफ्रीका महाद्वीप के पश्चिम की ओर उसके दक्षिणी तट पर स्थित है। नाइजीरिया दुनियॉ का सातवॉ सबसे ज़्यादा जनसंख्या वाला देश है और अफ्रीका का सबसे ज़्यादा जनसंख्या वाला देश है। यहॉ पेट्रोल बहुत होता है और यही इनकी आमदनी का मुख्य जरिया है।

यद्यपि नाइजीरिया में बहुत सारी जनजातियॉ हैं पर वहॉ की तीन जनजातियॉ सबसे ज़्यादा मशहूर हैं – योरुबा, फुलानी या हौसा और ईबो। यहॉ **500** से भी ज़्यादा भाषाऍ बोली और समझी जाती हैं पर योरुबा हौसा और ईबो भाषाऐं सबसे ज़्यादा बोली और समझी जाती हैं। पर टूटी अंग्रेजी बहुत सारे लोग बोलते और समझते हैं। इनकी अपनी कोई लिपि नहीं है ये अपनी भाषाऐं लिखने के लिये रोमन लिपि का इस्तेमाल करते हैं।

यहॉ की जनसॅख्या में ईसाई और मुसलमान करीब करीब आधे आधे हैं। नाइजीरिया में खाना बहुत तीखा बनता है और वहॉ के लोग अधिकतर पाम का तेल और मूॅगफली का तेल खाते है। ये लोग बीयर भी बहुत पीते हैं। यहॉ की स्टार बीयर बहुत अच्छी होती है और दूसरे देशों तक में भी बहुत मशहूर है। ये लोग फुटबाल और बास्केट बाल खूब खेलते हैं।

अफ्रीका के **54** देशों में से केवल पॉच देशों की ही लोक कथाऐं ज़्यादा मिलती हैं – नाइजीरिया, घाना, तनज़ानिया, दक्षिण अफ्रीका, और इथियोपिया। इसलिये इन देशों की लोक कथाऐं इन देशों के नाम से अलग से ही दी गयी हैं। इन सब देशों की अपनी अपनी लोक कथाऍ है और अपनी अपनी दंत कथाऐं हैं।

योरुबा दंत कथाओं के अनुसार दुनियॉ का पहला आदमी नाइजीरिया के एक शहर इले–इफे में पैदा हुआ था इसलिये दुनियॉ यहीं से शुरू होती है और यहॉ की सभ्यता दुनियॉ की हर सभ्यता से पुरानी है। उधर इथियोपिया में करीब साढ़े तीन मिलियन साल पुराना एक ढॉचा ऐसा मिला है जिससे ऐसा लगता कि दुनियॉ का सबसे पुराना आदमी यहीं था। मिश्र के पिरामिडों को कौन नहीं जानता कि वहॉ की सभ्यता कितनी पुरानी है।

इस महाद्वीप से हमने **400** से भी अधिक लोक कथाऐं इकट्ठी की हैं। वे सभी लोक कथाऐं कुछ "अफ्रीका की लोक कथाऐं", कुछ व्यक्तिगत देशों के, और कुछ व्यक्तिगत विषयों के अन्तर्गत दी जाती हैं। जैसे अफ्रीका के देशों में पश्चिमी अफ्रीका के खरगोश, इजापा कछुए और अनन्सी मकड़े की लोक कथाऐं बहुत सारी हैं और बहुत मशहूर हैं इसलिये उनको उनके नाम से ही प्रकाशित किया गया है। वे यहॉ शामिल नहीं की गयीं है।

यहॉ नाइजीरिया देश की लोक कथाओं का पहला संकलन प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम सबको बहुत पसन्द आयेंगी और नाइजीरिया की संस्कृति और सभ्यता के बारे में कुछ जानकारी देंगी।

1 एक उदास राजा और उसका उदास राज्य[1]

एक समय की बात है कि एक दूर देश में एक राजा राज करता था। उस राजा के पत्नियॉ तो बहुत सारी थीं परन्तु उसके उनसे बच्चा कोई नहीं था। जब वह दूसरे देशों के राजाओं को देखता, जिनके कई बच्चे थे तो वह इस दुख से और भी अधिक उदास हो जाता कि उसके कोई बच्चा नहीं है।

एक दिन एक दूसरे राज्य से एक जादूगर उस राजा के राज्य में घूमने आया। उसने देखा कि उस राज्य के सभी लोग उदास हैं। बाजार खाली पड़े हैं। कहीं कोई हलचल और शोर शराबा नहीं है। एक आदमी उधर से गुजर रहा था वह भी उदास था।

जादूगर उस आदमी के पास गया और उससे राज्य की उदासी की वजह पूछी तो उस आदमी ने बताया कि सारे राज्य की उदासी की वजह केवल उनके राजा की उदासी है।

यह सुन कर जादूगर ने राजा से मिलने का निश्चय किया और राजमहल की तरफ चल दिया। राजमहल पहुॅचने पर जादूगर ने वहॉ भी चारों तरफ खामोशी और उदासी छायी पायी। वह जगह उस

[1] A Sad King and His Sad Kingdom – a folktale from Nigeria, Western Africa.

को इतनी ज़्यादा खामोश और उदास लगी कि वह कुछ डर सा गया।

राजा के सामने आ कर उसने बड़े आदर से उसकी उदासी की वजह पूछी। राजा ने जवाब दिया — "मेरे पास जमीन जायदाद, धन दौलत, पत्नियॉ सभी कुछ है पर मेरे बच्चा कोई नहीं है जिसको मैं अपने मरने के बाद यह सब कुछ सौंप कर जा सकूॅ।"

जादूगर मुस्कुराया और बोला — "राजा साहब यह तो कोई समस्या न हुई। आप अपनी पत्नियों को बुलाइये।"

राजा ने अपनी सारी पत्नियों को वहॉ बुला लिया। जादूगर ने अपने जादू के थैले में से कुछ दवा सी निकाली और उसको एक बड़े बरतन में पानी में डाला और राजा की सब पत्नियों से उसमें से थोड़ा थोड़ा पीने के लिये कहा। पत्नियों ने ऐसा ही किया।

फिर जादूगर ने राजा से कहा कि वह उनको अपने अपने घर भेज दें और तभी वापस लायें जब उनके बच्चे हो जायें। यह सुन कर राजा बहुत प्रसन्न हुआ और उसने जादूगर को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और बहुत सारी भेंटें दे कर विदा किया।

अगले दिन राजा की सारी पत्नियॉ खुशी खुशी बढ़िया बढ़िया कपड़े पहन कर अपना अपना सामान टोकरियों में बॉध कर महल के सामने खड़ीं थीं पर उनमें से एक पत्नी कुछ अलग सी और दुखी सी खड़ी थी। उसके कपड़े भी पुराने थे और उसका सामान भी एक फटे से थैले में रखा था।

वह राजा की सबसे छोटी पत्नी थी। और वह किसी को फूटी ऑख नहीं भाती थी। जब सबसे बड़ी पत्नी को सुन्दर कपड़े बॉटने को दिये गये तो उसने जलन के कारण सबसे छोटी पत्नी को उन कपड़ों में से कुछ भी नहीं दिया।

सभी पत्नियों को अपने अपने घर जाना था और उसकी कोई भी पत्नी उसके अपने राज्य की नहीं थी इसलिये सभी पत्नियॉ अपने मायके जाने में बहुत खुश थीं पर सबसे छोटी पत्नी का कोई घर ही नहीं था।

राजा ने अपनी सब पत्नियों को विदा किया और सब अपने अपने घर चलीं गयीं। सबसे छोटी पत्नी का कोई घर नहीं था सो वह एक जंगल में चली गयी। कुछ महीनों के बाद वहॉ एक गुफा में उसने एक बेटे को जन्म दिया।

बेटे को अपनी पीठ पर बॉध कर वह राजा के महल की तरफ चल दी।

रास्ते में एक नाला पड़ता था। उस नाले के आस पास उसे कुछ लोग दिखायी दिये। पास से देखने पर पता चला कि वे तो राजा की बड़ी पत्नियॉ थीं। वह जब उनके और पास आयी तब तो वह डर ही गयी क्योंकि उन सबकी कमर पर बच्चों की बजाय लकड़ी, पत्थर, लोहा आदि बॅधे हुए थे।

उसने अपने बच्चे को अपनी पीठ से उतारा और नाले में स्नान करने चली गयी। जब राजा की बड़ी पत्नियों ने छोटी पत्नी के बेटे को देखा तो वे जल भुन कर खाक हो गयीं।

उन्होंने उस बच्चे को उठाया और उसको नाले में डुबो दिया और फिर वे अपने लकड़ी, पत्थर और लोहे के टुकड़ों को कमर पर बॉधे राजा के महल में पहुॅचीं।

मगर सबसे छोटी पत्नी के पास तो कुछ भी नहीं था क्योंकि उसके बच्चे को तो राजा की दूसरी पत्नियों ने मार डाला था। जब राजा ने अपनी पत्नियों की लायी हुई चीज़ों को देखा तो वह दुख के गहरे सागर में डूब गया।

कुछ समय बाद ही एक ताड़ी[2] निकालने वाला उस नाले पर पानी भरने आया तो वहॉ उसने किसी के चिल्लाने की आवाज सुनी। उसने इधर उधर देखा पर उसे कोई दिखायी नहीं दिया। ध्यान से सुनने पर उसे लगा कि आवाज तो नाले के अन्दर से आ रही थी।

उसने सुना — "मैं यहॉ की जल परी हूॅ। आप सब सुनें। अगर कोई इस बच्चे को सात दिनों के अन्दर अन्दर लेने नहीं आया तो मैं इसको मछली में बदल दूॅगी।"

ताड़ी वाला राजा के पास भागा भागा गया। उसने राजा को सारी कहानी बतायी तो राजा भी नाले के पास भागा भागा आया

[2] Translated for the words "Palm wine" which is made of palm tree juice.

और वहॉ जल परी को कुछ भेंटें चढ़ाने के बाद उस बच्चे को उससे ले लिया। अब जब बच्चा मिल गया था तो उसकी मॉ को ढूँढना जरूरी था।

राजा ने मुनादी पिटवा दी कि राज्य की हर स्त्री सबसे अच्छा पकवान बना कर आज से सातवें दिन बाजार के चौराहे पर लायेगी।

सो सातवें दिन सभी स्त्रियॉ अपना अपना सबसे अच्छा पकवान बना कर लायीं और गॉव के चौराहे पर ला कर रख दिया। राजा ने बच्चे को छोड़ दिया और उससे हर स्त्री के पास से गुजरने को कहा।

जब बच्चा जा रहा था तो किसी ने उसको पुचकारा, किसी ने उसका हाथ पकड़ा, किसी ने उसे अपनी ओर खींचा, परन्तु वह सबको छोड़ता हुआ एक और ही स्त्री की तरफ चल दिया जो एक कूड़े के ढेर के पास बैठी थी। यह राजा की सबसे छोटी पत्नी थी।

राजा ने जब अपनी सबसे छोटी पत्नी को देखा तो वह बहुत खुश हुआ। सो यह लड़का तो उसका अपना ही बेटा निकला।

उसने अपनी सब पत्नियों को भगा दिया और अब वह अपने खुश राज्य में खुशी खुशी अपनी सबसे छोटी पत्नी के साथ रहने लगा।

2 खोया हुआ वारिस[3]

बहुत पुरानी बात है जब अफ्रीका के नाइजीरिया देश में एक राजा राज करता था। उसके तीन पत्नियॉ थीं पर उनमें से किसी के कोई बच्चा नहीं था। उसको एक बेटे की जरूरत थी जो उसके बाद उसका राज काज देख सके।

वह इसके लिये बहुत परेशान था सो उसने एक इफा पुजारी[4] को बुलाया और उसको अपनी परेशानी बतायी। साथ में यह भी कहा कि अब समय कम था सो उसे जो कुछ करना है वह वह जल्दी करे।

इफा पुजारी अपना तख्ता और अपनी कौड़ियॉ[5] ले कर आया जिससे उसको राजा की समस्या का हल ढूँढना था। उसने अपनी कौड़ियों की सहायता से राजा को बताया कि उसके एक लड़का होगा पर किस पत्नी से होगा यह उसने नहीं बताया।

उसने यह भी कहा कि वह एक काढ़ा तैयार करेगा जिसको पीने से उसकी तीनों पत्नियों को बच्चे की आशा हो जायेगी। थोड़ी

[3] The Lost Heir – a folktale from Nigeria, West Africa. Taken from the Web Site : http://allfolktales.com/wafrica/lost_heir.php

[4] Ifa Priest – a kind of Priest among the Ifa Tribe

[5] Cowrie shells – see their picture above.

देर बाद वह एक काढ़ा लिये लौटा जिसको राजा की तीनों पत्नियों को पीना था।

राजा की दोनों बड़ी पत्नियॉ राजा की सबसे छोटी पत्नी से बहुत जलती थीं और उसके साथ बहुत बुरा बरताव करती थीं सो उन्होंने काढ़े का वह बरतन केवल अपने लिये रख लिया।

उन्होंने सोचा कि यदि छोटी पत्नी उस काढ़े को नहीं पियेगी तो उसको बेटा नहीं होगा। दोनों बड़ी पत्नियों ने काढ़ा बॉट कर पी लिया और खाली बरतन साफ करने के लिये रख दिया।

जब छोटी पत्नी ने काढ़े का बरतन खाली देखा तो वह बहुत दुखी हुई और यह सोच कर रोने लगी कि उसने तो मॉ बनने का मौका ही खो दिया।

फिर यह सोच कर कि शायद कुछ हो जाये वह काढ़े वाले बरतन में से जो कुछ थोड़ा बहुत काढ़ा उसमें चिपका हुआ था उसी को चाटने लगी। उसने वह बरतन चाट चाट कर साफ कर दिया।

बहुत जल्दी ही राजा की तीनों पत्नियों को बच्चे की आशा हो गयी। समय आने पर राजा की दोनों बड़ी पत्नियों ने दो लड़कियों को जन्म दिया। अब उन दोनों का ध्यान राजा की छोटी पत्नी पर लग गया कि हो सकता है कि वही लड़के को जन्म दे।

जब उसको बच्चा होने वाला था तो दोनों बड़ी पत्नियॉ उसके पास ही थीं। छोटी पत्नी ने एक लड़के को जन्म दिया। यह देखते ही दोनों बड़ी पत्नियों ने उस लड़के को तो वहॉ से हटा लिया और

एक पत्थर ला कर रख दिया। फिर दोनों ने शोर मचा दिया कि राजा की छोटी पत्नी ने तो एक पत्थर को जन्म दिया है।

राजा ने जब यह सुना तो उसने छोटी पत्नी को अपने घर से बाहर निकाल दिया। वह बेचारी गॉव के बाहर जा कर रहने लगी।

इस बीच में उन दोनों ने लड़के को एक सूती कपड़े में लपेटा और जंगल में एक पेड़ के नीचे छोड़ दिया। एक दवा बनाने वाला जंगल में दवा बनाने के लिये पत्ते जड़ें आदि इकट्ठा कर रहा था। उसने इस लड़के देखा तो उसको उठा कर अपने घर ले गया और अपने बेटे की तरह से पालने पोसने लगा।

कई साल बाद राजा मर गया बिना किसी वारिस के। अब राजा किसे बनाया जाये? क्योंकि कोई ऐसा आदमी दिखायी नहीं देता था जिसको वे राजा बना सकें।

सो इफा पुजारी को फिर से बुलाया गया। इफा पुजारी ने फिर से अपनी कौड़ियॉ फेंक कर बताया कि राजा का वारिस तो पैदा हो चुका है और एक घने जंगल में एक दवा बनाने वाले के घर में मौजूद है।

सो कुछ आदमी उस बच्चे को लाने के लिये उस दवा बनाने वाले आदमी के पास गये और उस बच्चे को वहॉ से ले आये और उसको राजा बनाने के लिये सोचने लगे पर उस बच्चे के जन्म के बारे में तो कुछ पता ही नहीं था कि वह किसका बेटा था।

इफा पुजारी ने फिर बताया कि उसकी मॉ भी उसी गॉव में रहती थी। पर वह थी कौन? गॉव की हर औरत यह सोचती कि वह उस होने वाले राजा की मॉ है पर ऐसा तो मुमकिन नहीं था कि हर औरत उस बच्चे की मॉ हो सकती।

इफा पुजारी ने फिर एक तरकीब सुझायी कि गॉव की हर औरत मॉस बना कर गॉव के चौराहे पर लायेगी। होने वाला राजा उन सब बरतनों में से मॉस को चखेगा और उसी से वह अपनी मॉ को पहचानेगा।

यह सुन कर सब औरतों ने अपने अपने घर में सबसे ज़्यादा बढ़िया तरीके से मॉस पकाना शुरू कर दिया जैसा पहले कभी उन्होंने अपनी सारी ज़िन्दगी में नहीं पकाया था। तय किये गये दिन वे सभी अपना अपना पका मॉस ले कर गॉव के चौराहे पर इकट्ठा हुईं।

सबके बरतनों में मॉस को स्वाददार बनाने के लिये सैंकड़ों किस्म के मसाले पड़े हुए थे पर एक बरतन उनमें ऐसा भी था जिसमें केवल सब्जियॉ ही पड़ी थीं।

क्योंकि वह औरत गॉव के बाहर रहती थी और बहुत गरीब थी। क्योंकि वह खुद भी जंगल में मिलने वाले फलों और जड़ों पर गुजारा करती थी सो उसने केवल जंगल से मिलने वाली सब्जियॉ ही पका दी थीं।

गॉव के चौराहे पर बरतनों की मीलों लम्बी लाइन लगी थी और हर बरतन में से खूब खुशबुऐं उड़ रही थीं। होने वाला राजा आया

और उसने सब बरतनों में से खाना चखना शुरू किया। सुबह से शाम हो गयी। आखिर वह उस आखिरी बरतन के पास पहुँचा जहाँ वह गॉव के बाहर रहने वाली औरत बैठी हुई थी।

उसने उसके बरतन में रखी सब्जी चखी और खुशी से नाच उठा कि वही उसकी मॉ थी। इस तरह उस निकाली गयी रानी ने बहुत सालों बाद फिर से राजमहल में अपनी जगह पा ली थी।

3 लैचकी राजकुमार[6]

एक बार की बात है कि नाइजीरिया के एक गॉव में बहुत ही अमीर और ताकतवर राजा रहता था। वह इतना ताकतवर था कि पड़ोस के गॉव के राजा भी उसको टैक्स देते थे। इसके बदले में वह उनकी उनके दुश्मनों से रक्षा करता था।

इस राजा के पास सब कुछ था जो वह चाहता था पर फिर भी उसके पास एक चीज़ नहीं थी जिसकी उसको बहुत इच्छा थी और वह था एक बेटा।

जैसा कि इस देश में रिवाज था राजा के चार पत्नियॉ थीं। हालॉकि उन सबसे उसके पन्द्रह बच्चे थे पर वे सब लड़कियॉ थीं, लड़का कोई नहीं।

हालॉकि ये चारों पत्नियॉ उसकी रिवाज के अनुसार थीं पर फिर भी वह अपनी पहली पत्नी के कहने से अपनी मैबू[7] नाम की आखिरी पत्नी से बहुत ही बुरा बरताव करता था।

उसने अपनी जमीन पर अपने महल के पास अपनी तीनों पत्नियों के लिये बहुत सुन्दर सुन्दर घर बनवाये। पर अपनी चौथी पत्नी के लिये उसने एक झोंपड़ा बनवाया जो था तो उसकी अपनी जमीन पर ही पर उसके महल से सबसे ज़्यादा दूरी पर था।

[6] The Latchkey Prince – a folktale from Nigeria, Africa.

[7] Mebu – the name of the King's fourth queen

जब भी वह अपनी पत्नियों के लिये बाहर से चीज़ें ले कर आता तो वह हमेशा अपनी तीन पत्नियों को ही याद रखता। उसकी चौथी पत्नी राजा की जमीन पर इतनी गरीब थी कि उसके पास भर पेट खाना भी नहीं था।

राजा ने बेटा पाने के लिये बहुत कुछ किया पर सब बेकार गया। वहॉ के रीति रिवाजों के अनुसार उसकी कोई भी लड़की उस गॉव की बागडोर अपने हाथ में नहीं ले सकती थी, यानी कोई भी लड़की उसकी वारिस नहीं बन सकती थी।

आखिर में राजा अपने पुरखों के मन्दिर के बड़े पुजारी के पास गया और उससे अपना दुखड़ा रोया। वहॉ उसने राजा को उसकी चारों पत्नियों के लिये एक खास किस्म के पाम के चार बीज[8] दिये।

उसने राजा से कहा — "तुम्हारी हर पत्नी इस बीज को तोड़े पर बजाय इसकी गिरी खाने के वे इनके छिलके खाये और इसकी गिरी फेंक दें।"

राजा बोला — "मैं उनको कह दूँगा।" और अपने महल को चला गया।

जब वह अपने घर पहुँचा तो उसने वे पाम के बीज अपनी तीनों पत्नियों को दे दिये और बड़े पुजारी जी का बताया हुआ उसको

[8] Palm Kernels – edible seed of the oil palm tree. See their picture above.

खाने का तरीका भी बता दिया। चौथा बीज उसने नदी में फेंक दिया।

राजा की तीनों पत्नियॉ बहुत घमंडी थीं। पहले तो वे यह ही नहीं समझ सकीं कि कोई पाम की गिरी खायेगा ही क्यों? क्योंकि वह तो गरीब लोगों का खास खाना है फिर उसके छिलके को तो खाने का सवाल ही पैदा नहीं होता।

एक ने कहा — "मैं समुद्र में घुस कर यह शिकायत कैसे कर सकती हूॅ कि साबुन मेरी ऑखों में लग रहा है?"

दूसरी बोली — "मैं पाम के बीज का छिलका कैसे खा सकती हूॅ? मैंने तो कभी पाम की गिरी भी नहीं खायी।"

तीसरी बोली — "मैंने ऐसी बेकार की बात तो कभी नहीं सुनी कि पाम की गिरी फेंक दो और उसका छिलका खा लो।"

सो उन सबने अपने अपने पाम के बीज तोड़े और उनके छिलके फेंक दिये और राजा की बात रखने के लिये उनकी गिरी खा लीं।

एक बोली "उफ़"। दूसरी बोली "फू।" और उसने उस गिरी का छूॅछ थूक दिया। तीसरी बोली "मैं सोच सकती हूॅ कि इस बीज का छिलका कैसा होगा।" कह कर उसने पाम की गिरी तो किसी तरह से खा ली पर उसका छिलका फेंक दिया।

राजा का वह नौकर जिसको उसने अपनी तीनों पत्नियों को यह सब कहने को लिये भेजा था राजा का मेबू के साथ का बरताव बिल्कुल पसन्द नहीं करता था। सो जब भी उसको मौका लगता वह

मेबू के लिये महल से छिपा कर खाना निकाल कर ले जाता और उसको दे देता।

जब उसने देखा कि राजा की दूसरी पत्नियों ने उन पाम के बीजों का क्या किया तो उसने पाम के बीज के वे छिलके उठाये और उनको मेबू को दे कर बोला — "ये छिलके तुमको खाने ही हैं मेबू। मुझे अफसोस है कि आज मैं तुम्हारे लिये क्या ले कर आया पर आज मैं तुम्हारे लिये बस यही ला सका।"

मेबू बोली — "कोई बात नहीं। तुम तो मेरा हमेशा ही बहुत ख्याल रखते हो। तुम तो मेरे ची[9] की तरह हो।

इसके अलावा एक पिता जो याम[10] अपनी बेटी के हाथ की हथेली पर रखता है वह उसको कभी जलाता नहीं।" मेबू ने पाम के वे छिलके उस नौकर के हाथ से ले कर खा लिये।

पाम के वे बीज अपनी पत्नियों को देने के बाद राजा को यकीन था कि उसकी तीनों प्रिय पत्नियॉ लड़कों को जरूर जन्म देंगी।

उसने यह भी निश्चय कर लिया था कि उन लड़कों के जन्म के बाद जो कोई भी लड़की उसके घर में जन्म लेगी वह उसको घर से बाहर निकाल देगा।

---

[9] Chi – their personal god

[10] Yam is a tuber like vegetable. It is a staple food of West African countries, especially of Nigeria. See its picture above.

कुछ दिन बाद राजा की उन तीनों प्रिय पत्नियों ने एक एक करके तीन लड़कियों को जन्म दिया तो उसने उनको तुरन्त ही बाहर फेंक दिया गया।

पर जब मेबू की बारी आयी तो राजा की बड़ी पत्नी उसकी दाई बना कर भेजी गयी। राजा की बड़ी पत्नी रानी ऐजो या मीनी[11] के नाम से जानी जाती थी। वह अपने नाम जैसी थी। मेबू को जब बच्चा हुआ तो वह एक लड़का था।

यह देखते ही ऐजो ने उस लड़के को तो नदी में फेंक दिया और मेबू से कहा कि उसने एक मरी हुई बच्ची को जन्म दिया है। मेबू बेचारी और क्या करती वह अकेली ही अपनी झोंपड़ी में चली गयी और अपनी बदकिस्मती पर रोती रही।

पर वह भगवान जो बच्चों की देखभाल करता है जरूर ही उस भगवान से कोई दूसरा भगवान होता होगा जो बड़े लोगों की देखभाल करता है।

क्योंकि उस भगवान ने बजाय उस बच्चे को नदी में डुबोने के उसे तैरा दिया और वह नदी के बहाव के साथ नदी में नीचे की तरफ बहता चला गया।

नीचे नदी में एक अकेली बूढ़ी स्त्री अपने कपड़े धो रही थी। वहॉ जा कर वह बच्चा उसकी टॉगों में

[11] Ajo or Meany – the name

अटक गया। उसको लगा कि शायद कोई मछली आ कर उसकी टॉगों से लिपट गयी है।

सो जैसे ही उसने अपना मुँह फिरा कर अपने बड़े चाकू[12] को उठाने के लिये हाथ बढ़ाया ताकि वह उस मछली को मार सके तो उसने देखा कि वह तो मछली नहीं एक बच्चा था।

वह आश्चर्य और खुशी से चिल्लायी — "ओह बच्चा?" फिर तुरन्त ही उसके मुँह से निकला "किसका बच्चा है यह और इसकी मॉ कहॉ होगी?"

उसने उस बच्चे को उठा लिया और उसे पानी पिलाया। उसने सोचा — "लगता है किसी ने इसको राजा के कानून के डर से नदी में फेंक दिया है।"

पहले तो वह बहुत देर तक उस बच्चे की मॉ का इन्तजार करती रही कि अगर वह उसको ढूँढ रही हो तो आ कर उसे ले जाये पर जब उसे लेने के लिये काफी देर तक कोई नहीं आया तो वह उसको अपने घर ले गयी और उसको पालने पोसने लगी।

घर जाते समय वह कहने लगी — "आखिर भगवान ने आज मेरी प्रार्थना सुन ही ली।"

[12] Translated for the word "Matchet" or "Cutlass" – a long blade knife or short blade sword mostly used for cutting grass or trees etc. See its picture above.

वह बच्चा बड़ा हो कर अच्छा सुन्दर लड़का हो गया। वह बुढ़िया उस बच्चे को बहुत प्यार करती थी पर साथ में इस बात के लिये चिन्ता भी करती थी कि जरूर ही कभी कोई आयेगा और उसको ले जायेगा।

इसलिये जब भी कभी वह बाहर जाती तो वह उसको घर में ताले में बन्द कर जाती और इस बात का ध्यान रखती कि उसके लिये घर में खाना और पानी काफी रहे। इस तरह वह छोड़ा हुआ बच्चा एक सुन्दर लैचकी बच्चे के रूप में बढ़ने लगा।

एक दिन राजा का कुत्ता एक गिलहरी का पीछा कर रहा था। पीछा करते करते वह उसी मकान के पीछे की तरफ आ गया जहॉ यह लड़का रहता था।

इतने में वह गिलहरी उस कुत्ते की ऑखों से ओझल हो गयी। सो वह कुत्ता इधर उधर सूँघता हुआ घूमने लगा और उस बुढ़िया के मकान की बॉस की चहारदीवारी लॉघ कर अन्दर चला गया। वह कुत्ता वहॉ तक आ गया जहॉ वह लड़का खाना खा रहा था।

लड़के ने उसे पुकारा — "डौगी डौगी। यहॉ आ।"

और उसको थोड़ा सा खाना और हड्डी खाने के लिये दी। फिर उसने कुत्ते को थपथपाया। थोड़ी देर में वह कुत्ता वापस जाने लगा तो उस लड़के ने गाया —

ओ राजा के कुत्ते तूने मुझे ढूँढ लिया, ला ला ला ला
मेरे पिता ने यह कानून बनाया, ला ला ला ला
लड़कियों को फेंक देना चाहिये, ला ला ला ला
लड़कों को पालना चाहिये, ला ला ला ला

उसने मुझे पैदा किया और फेंक दिया, ला ला ला ला
राजा बहुत नीच है, ला ला ला ला
राजा की पत्नी भी नीच है, ला ला ला ला
राजा का नौकर मेरा भगवान है, ला ला ला ला

जब उसका गाना ख़त्म हो गया तो कुत्ता वहाँ से अपने मालिक के पास भाग गया और वहाँ जा कर बहुत ज़ोर ज़ोर से अपनी पूँछ हिलाने लगा पर राजा उसकी पूँछ हिलाने का मतलब न समझ सका और उसने उसको केवल थपथपा कर बाहर भेज दिया।

अगले दिन वह कुत्ता फिर से उस लड़के के पास गया। अब की बार कुत्ते को वह लड़का अपना दोस्त लग रहा था। पहले की तरह से वे दोनों खूब खेले और उन्होंने साथ साथ खाना खाया।

फिर लड़के ने उसको थपथपाया और जब वह कुत्ता अपने घर जाने लगा तो लड़के ने उस कुत्ते के लिये अपना वही गाना फिर से गाया —

ओ राजा के कुत्ते तूने मुझे ढूँढ लिया, ला ला ला ला
मेरे पिता ने यह कानून बनाया, ला ला ला ला
लड़कियों को फेंक देना चाहिये, ला ला ला ला
लड़कों को पालना चाहिये, ला ला ला ला

उसने मुझे पैदा किया और फेंक दिया, ला ला ला ला
राजा बहुत नीच है, ला ला ला ला
राजा की पत्नी भी नीच है, ला ला ला ला
राजा का नौकर मेरा भगवान है, ला ला ला ला

कुत्ता फिर से अपने घर दौड़ गया और फिर से अपने मालिक के पास जा कर अपनी पूँछ ज़ोर ज़ोर से हिलाने लगा।

अबकी बार राजा बोला — "क्या बात है कि तुम मेरे पास रोज इस समय आते हो और अपनी पूँछ ज़ोर ज़ोर से हिलाते हो?"

कुत्ते ने एक दोस्ती की सी शक्ल दिखायी और बोला — "म्म, म्म, म्म, म्म। वुफ़, वुफ़।" उसने राजा की तरफ देखा और फिर दरवाजे की तरफ बढ़ गया। वहाँ वह राजा के आने का इन्तजार करने लगा।

राजा उठते हुए बोला – "ठीक है ठीक है। चलो दिखाओ मुझे कि तुम मुझे क्या दिखाना चाहते हो और क्या पा कर तुम इतने खुश हो।"

राजा कुत्ते के पीछे पीछे चलते चलते उस लड़के के घर तक आगया। जब उसने वह सुन्दर लड़का चहारदीवारी के भीतर देखा वह तो चुपचाप उसको खड़ा देखता ही रह गया।

लड़के के नाक नक्श राजा को इतने अच्छे लगे कि वह उसको तुरन्त ही चाहने लगा। वह लड़का अपने पिता की हूबहू नकल था। राजा को लगा कि जैसे उसमें वह अपना छोटा रूप देख रहा हो।

उसने निश्चय कर लिया कि वह यह जरूर मालूम करेगा कि उस लड़के के मॉ बाप कौन हैं और फिर वह उनको अपने घर बुलाना चाहेगा।

सो वह लड़के से बोला — "अगर तुम्हारे माता पिता मुझे तुम्हारे पास आने देंगे और तुम्हें मेरे बेटे की तरह से मानने देंगे जो मेरा कभी नहीं था तो मुझे बहुत सन्तोष मिलेगा।"

जब वह उस लड़के से यह बात कर रहा था कि उसी समय वह बुढ़िया घर वापस आ गयी। आपस में काफी देर तक बात करने के बाद उस बुढ़िया ने जो भी कुछ उसे उस लड़के के बारे में मालूम था राजा को वह सब बता दिया।

कि किस तरह उसने उस लड़के को नदी में पाया और फिर कैसे उसको इतना बड़ा किया। फिर कैसे किसी पंडित[13] ने उसको यह भी बताया था वह एक राजा का बेटा था – हॉ, एक लैचकी राजकुमार।

राजा ने पूछा — "मेरी कौन सी पत्नी इस बच्चे की मॉ है?"

बुढ़िया बोली — "मैं नहीं जानती पर इस बात को जानने का एक तरीका है।"

राजा बोला — "तुम मुझे वह तरीका बताओ और उसकी कीमत बताओ। मैं तुमको दूँगा।"

[13] Translated for the word "Diviner" – who know the things through divine means

बुढ़िया बोली — "राजा साहब, इसमें पैसे की बात नहीं है इसमें तो प्यार की बात है और प्यार की हमेशा जीत होती है।"

जैसे ही यह बात राजा की पत्नियों के पास पहुँची कि राजा का खोया हुआ बेटा मिल गया है तो राजा की हर पत्नी यह कहने लगी कि वह मेरा बेटा है और उसको अपना बेटा बनाना चाहने लगी।

पर उसकी असली मॉ को पहचानने का एक ही तरीका था – उसके लिये खाना बनाना। जिस किसी रानी के हाथ का बनाया खाना वह लड़का खा लेगा उसी से राजा यह निश्चय करेगा कि उसकी मॉ उसकी कौन सी पत्नी है।

इस काम के लिय एक दिन निश्चित किया गया। राजा ने अपनी तीनों प्रिय पत्नियों को कुछ पैसे दिये और खाने में कोई भी सबसे अच्छी चीज़ जो भी वे जानती थीं बनाने के लिये कहा।

हर बार की तरह से उसने अपनी चौथी पत्नी मेबू को कुछ नहीं दिया पर उससे भी कुछ बनाने के लिये कहा।

तीनों पत्नियों ने अपना खाना बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उन्होंने बहुत पैसा लगा कर बहुत ही स्वादिष्ट खाना बनाया और उसको सुन्दर सी मेज पर सजाया।

जब कि मेबू ने अपनी झोंपड़ी के आस पास में लगी सब्जी तोड़ी और राजा के कूड़े से जो कुछ भी उसको मिला उस सबको मिला कर एक अजीब सा खाना बनाया। उस खाने को उसने राजा के

अस्तबल के पास की राजा की जमीन पर बिना किसी मेज के घास पर ही रख दिया।

राजा ने अपने बेटे को एक राजकुमार के लायक अच्छे शाही कपड़े पहनाये क्योंकि वह तो अब युवराज था और फिर उसको एक राजकुमार की हैसियत से महल से बाहर मैदान में निकाला। उसकी शान सारे गॉव को लुभा रही थी।

जब वह पहले खाने की तरफ आया तो हर एक के मन में एक उत्सुकता जागी कि वह किसका खाना खायेगा। उसने उस खाने को देखा और आगे चल दिया। उसने दूसरी मेंजें भी खाना बिना चखे ही पार की।

फिर वह अपने पिता से बोला — "राजा साहब, आपकी तो चार पत्नियॉ हैं पर मुझे तो आपके राजकुमार के लिये यहॉ केवल तीन मेजें ही दिखायी दे रही हैं।"

यह सुन कर नौकरों ने राजा की घुड़साल की तरफ इशारा किया जहॉ मेबू ने अपना खाना लगा कर रखा था। राजकुमार तब उस घुड़साल की तरफ बढ़ा और बिना किसी हिचक के उसने वह सारा खाना खा लिया जो मेबू ने वहॉ सजा कर रखा था।

सारे लोग खुशी से भर गये। पर वे यह देख कर बहुत ही आश्चर्यचकित हुए कि वह लड़का राजा की एक ऐसी पत्नी से था जिसको राजा ने छोड़ रखा था।

ऐसी पत्नी ने उनके होने वाले राजा को जन्म दिया था। राजा ने उस लड़के को उसके केवल जन्म के हालात की वजह से ही खो दिया था।

इसके बाद राजा ने अपनी तीनों पत्नियों को तलाक दे दिया और केवल मेबू को ही अपनी पत्नी बना कर रखा। उसने फिर एक कानून बना दिया कि उसके देश में कोई भी आदमी एक बार में एक से ज़्यादा पत्नी नहीं रखेगा।

राजा ने अपनी नौकरानियों से कहा कि वे मेबू को महल में ले जायें और उसे उसके राज्य का सबसे अच्छा तेल लगा कर नहलायें धुलायें। अच्छे से अच्छे शाही कपड़े पहनायें। अच्छे से अच्छी खुशबू लगायें। उसके सिर पर रानी के लायक ताज रखें क्योंकि वह अब हमेशा के लिये उसकी सच्ची पत्नी हो जायेगी।

फिर उसने मेबू को गले से लगाया और उसकी नौकरानियॉ मेबू को महल के अन्दर ले गयीं।

उस दिन के बाद से राजा और मेबू खुशी खुशी रहने लगे। राजा के मरने के बाद लैचकी राजकुमार जिसको उसकी बड़ी रानियों ने मरा हुआ घोषित करके फेंक दिया था राजा बन गया और उसने उस देश पर बहुत दिनों तक राज किया।

4 बॉसुरी[14]

बहुत साल पुरानी बात है एक आदमी अपनी दो पत्नियों के साथ रहता था। उसकी बड़ी पत्नी के तो कई बच्चे थे परन्तु छोटी पत्नी के केवल एक ही बेटा था।

एक दिन वह आदमी अपने सारे परिवार के साथ खेत पर गया। वहॉ सारे दिन सबने मिल कर काम किया फिर शाम को अपने अपने चाकू हल टोकरियॉ आदि इकट्ठी कीं और जल्दी जल्दी अपने घर चल दिये।

सात जंगल और सात नदियॉ पार कर वे सब अपने घर आये। अचानक उसकी छोटी पत्नी का बेटा बोला कि वह अपनी बॉसुरी तो खेत पर ही भूल आया था और अब वह उसको लाने के लिये अभी अभी वापस खेत पर जाना चाहता था।

उसकी मॉ ने रो कर उससे कहा भी कि इस समय रात को वह बॉसुरी लेने वहॉ न जाये। वह अगले दिन सुबह होते ही उसको नयी बॉसुरी दिला देगी।

पर वह तो अड़ गया कि उसको तो वही बॉसुरी चाहिये क्योंकि वह बॉसुरी उसकी अपनी बनायी हुई थी और वह उस बॉसुरी को किसी भी कीमत पर बदलना नहीं चाहता था।

[14] The Flute – a folktale from Nigeria, Western Africa

उसके पिता ने भी उसको बहुत समझाया और मना किया कि इस समय उसको खेत पर अपनी बॉसुरी लेने नहीं जाना चाहिये पर वह नहीं माना। आखिरकार उसके माता पिता ने उसको जाने तो दिया पर उससे होशियारी से जाने के लिये कहा।

जब वह खेत पर पहुँचा तो रात हो चुकी थी। वहॉ उसे भूत दिखायी दिये क्योंकि यह समय वहॉ भूतों के काम करने का था।

उन्होंने जब वहॉ एक बच्चे को देखा तो वे बहुत गुस्सा हुए। भूतों के नेता ने कहा — "ओ आदमी के बच्चे, तुझे यहॉ इस समय किसने भेजा है और तू यहॉ क्यों आया है?"

बेचारा बच्चा डर के मारे वहीं की वहीं खड़ा रह गया। बड़ी मुश्किल से उसके मुँह से निकला — "दिन में मेरे माता पिता यहॉ खेत पर काम करने आये थे। उस समय मैं यहॉ अपनी बॉसुरी भूल गया था अभी मैं वही लेने आया हूँ।"

भूतों के नेता ने पूछा कि अगर उसे उसकी बॉसुरी दिखायी जाये तो क्या वह उसे पहचान सकता है?

लड़का खुशी से बोला — "हॉ हॉ, क्यों नहीं। वह मेरी बॉसुरी है। मैं उसे पहचानूँगा क्यों नहीं।"

भूतों के नेता ने खाल के थैले में से एक सोने की बॉसुरी निकाली और उसको लड़के को दिखा कर पूछा — "क्या यह है तेरी बॉसुरी?"

लड़का बोला — "नहीं नहीं, यह मेरी बॉसुरी नहीं है।"

भूतों के नेता ने एक बार फिर उस चमडे के थैले में हाथ डाला और अबकी बार उसने उसमें से एक चॉदी की बॉसुरी निकाली और उसको दिखा कर उस लड़के से पूछा कि क्या वह थी उसकी बॉसुरी?

लड़का उदास हो कर बोला — "नहीं, यह बॉसुरी भी मेरी नहीं है।"

अबकी बार भूतों के नेता ने अपने थैले में से एक बॉस की बॉसुरी निकाली और उसको लड़के को दिखा कर पूछा — "क्या यह है तेरी बॉसुरी?"

लड़का उस बॉस की बॉसुरी को देखते ही खुशी से चिल्ला पड़ा — "हॉ, यही है मेरी बॉसुरी।"

भूतों का नेता बोला — "अगर यही है तेरी बॉसुरी तो इसे बजा कर दिखा न।"

लड़के ने भूतों के नेता के हाथ से बॉसुरी ले ली और उसे बजाना शुरू किया।

भूत उस लड़के की बॉसुरी सुन कर बहुत खुश हुए। भूतों का नेता बोला — "बच्चे, हम तेरी बॉसुरी सुन कर बहुत खुश हुए इसलिये हम तेरे माता पिता को एक भेंट देना चाहते हैं।"

ऐसा कह कर उसने दो छोटे भूतों को बुलाया और उनसे दो बरतन लाने के लिये कहा। दोनों भूत तुरन्त ही दो बरतन ले आये। भूतों के नेता ने उस लड़के से एक बरतन लेने के लिये कहा।

बरतन दोनों एक से थे, दोनों बन्द थे पर दोनों में से एक छोटा था और एक बड़ा। लड़के ने उनमें से छोटा वाला बरतन उठा लिया।

भूतों के नेता ने कहा — "खुश रह बच्चे। जब तू घर पहुँच जाये तो अपने माता पिता के सामने ही इस बरतन को तोड़ना।" लड़के ने भूतों के नेता का सिर झुका कर धन्यवाद किया और अपने घर चल पड़ा।

घर पहुँच कर लड़के ने वैसा ही किया जैसा कि भूतों के नेता ने उससे करने के लिये कहा था। उसने अपने माता पिता को बुलाया और सबसे पहले तो उसने अपने माता पिता को खेत पर जो कुछ भी हुआ था वह बताया और फिर उनके सामने ही उसने उस बरतन को तोड़ दिया।

तुरन्त ही उनके घर का ऑगन अच्छी अच्छी चीज़ों से भर गया जैसे सोना, चॉदी, कॉसा, अच्छे अच्छे कपड़े, मखमल, अनेक प्रकार के खाने, गाय, बकरियॉ आदि। लड़के की मॉ ने उस सामान से दो टोकरियॉ भरीं और अपनी सौत को दे आयी।

परन्तु उस आदमी की बड़ी पत्नी यह सब देख कर इतनी जली भुनी कि उसने वह भेंट भी नहीं ली और चिन्ता की वजह से वह रात भर सो भी नहीं पायी।

सुबह उठते ही उसने अपनी सौत से उन सब चीज़ों को पाने का तरीका पूछा। छोटी पत्नी ने जो कुछ भी हुआ था वह सब उसको सच सच बता दिया।

अगले दिन तड़के ही उसने अपने बड़े बेटे को उठाया और उसको अपनी बॉसुरी लाने के लिये कहा। फिर बोली — "आज हम लोग अपने खेत पर जायेंगे।"

"पर मॉ हम लोग कल ही तो खेत पर गये थे।" लड़का बोला।

मॉ ने कहा — "लेकिन हम आज भी जायेंगे।" कह कर वह अपने बेटे के साथ खेत पर चली गयी। जब वे खेतों पर गये तो वहॉ कोई काम तो था नहीं क्योंकि सारा काम तो पहले ही दिन खत्म हो चुका था फिर भी सारा दिन वे लोग वहॉ रहे।

जब शाम हुई तो बड़ी पत्नी ने अपनी टोकरी उठायी और घर चलने के लिये तैयार हुई। तो लड़के ने भी अपनी बॉसुरी उठायी और वह भी अपनी मॉ के साथ घर चलने लगा।

जब वे घर की ओर चलने लगे तभी मॉ ने कहा — "अरे बेवकूफ लड़के, क्या तुझे मालूम नहीं कि बॉसुरी को कैसे भूला जाता है? चल छोड़ अपनी बॉसुरी यहीं और घर चल।"

अब क्योंकि यह बॉसुरी लड़के की अपनी बनायी हुई तो थी नहीं और न उसको बजानी ही आती थी इसलिये यह सुन कर लड़के ने बॉसुरी वहीं पड़ी छोड़ दी और मॉ के साथ घर चल दिया।

जैसे ही वे लोग घर में घुसे कि उसकी मॉ ने अपने बेटे से कहा "जा और खेत पर से अपनी बॉसुरी उठा ला।" लड़का बेचारा यह सुन कर रोने लगा।

वह रात में अकेले खेत पर जाने से डर रहा था इसलिये कि वह वहॉ अकेले नहीं जाना चाहता था क्योंकि उसको मालूम था कि रात को वहॉ पर भूत आते थे और वह उनसे बहुत डरता था।

परन्तु उसकी मॉ ने उसे घर के बाहर धकेलते हुए कहा — "जा और बिना बॉसुरी और बिना बरतन के वापस नहीं आना।"

लड़का बेचारा डरते डरते खेत पर पहुँचा। वहॉ पहले दिन की तरह से भूत आ चुके थे। भूतों के नेता ने कहा — "ओ आदमी के बच्चे, तुझे यहॉ इस समय किसने भेजा है और तू यहॉ क्यों आया है?"

लड़का डर के मारे रोते रोते बोला — "आज हम यहॉ खेत पर बिना किसी काम के आये थे। मैं दिन में यहॉ अपनी बॉसुरी छोड़ गया था तो मेरी मॉ ने मुझे मेरी बॉसुरी और भेंट वाला बरतन लाने के लिये भेजा है।"

भूतों के नेता ने पहले की तरह से थैले में से एक सोने की बॉसुरी निकाली और उसको उस लड़के को दिखा कर पूछा "क्या यह है तेरी बॉसुरी?"

अब इस लड़के ने तो बॉसुरी अपने हाथ से बनायी नहीं थी जो उसे उससे लगाव होता। वह सोने की बॉसुरी देख कर ललचा गया और बोला — "हॉ, यही है मेरी बॉसुरी।"

भूतों के नेता ने कहा — "अच्छा? यही है तेरी बॉसुरी? तो यह ले अपनी बॉसुरी। पर ज़रा इसे बजा कर तो दिखा।"

उस लड़के को तो बॉसुरी बजानी भी नहीं आती थी सो उसकी बॉसुरी से ऐसे ही कुछ बेमतलब आवाजें निकलने लगीं। वह लड़का बहुत परेशान हुआ पर कुछ कर नहीं सका क्योंकि उसने तो कभी बॉसुरी बजायी ही नहीं थी। थोड़ी ही देर में वह थक कर रुक गया।

सभी भूत खामोश खड़े थे किसी से कुछ कहते नहीं बन पा रहा था। तब भूतों के नेता ने ही दो छोटे भूतों को बुलाया और उनसे बोला — "लाओ वे दोनों बरतन उठा लाओ।"

जैसे ही वे दो भूत दो बरतन उठा कर लाये लड़के ने एक भूत के हाथ से बड़ा वाला बरतन छीन लिया और जाने के लिये तैयार हुआ तो भूतों का नेता बोला — "बेटा, जब तू घर पहुँच जाये तभी अपने माता पिता के सामने ही इस बरतन को तोड़ना।"

लड़का बोला "हॉ मुझे मालूम है।" और बिना धन्यवाद दिये अपने घर की तरफ दौड़ गया।

हॉफता हॉफता वह घर पहुँचा। बरतन बहुत बड़ा था और भारी भी। उसकी मॉ घर के बाहर ही उसका इन्तजार कर रही थी। अपने बेटे को बड़ा सा बरतन लाते देख कर वह बहुत खुश हुई।

लड़का हॉफते हॉफते ही बोला — "उन्होंने कहा है कि इस बरतन को मैं अपने माता पिता के सामने ही तोड़ूँ सो पिता जी को और बुला लो।"

मॉ तुनक कर चिल्लायी — "तुम्हारे पिता को उस बरतन के बारे में क्या मालूम है जो हम उनको बुलायें। इसको तो हम अपने आप ही तोड़ लेंगे।" और लड़के को अन्दर ला कर उसने अपनी झोंपड़ी का दरवाजा बन्द कर लिया।

उसने अपने सभी बच्चों को इकट्ठा किया और अपनी झोंपड़ी में बने सभी छेद और दरारें भी बन्द कर दीं ताकि कोई भी चीज़ उनमें से निकल कर बाहर दूसरी झोंपड़ियों की तरफ न जा सके।

फिर उसने वह बरतन तोड़ दिया। बरतन के टूटते ही उसमें से सब प्रकार की बीमारियॉ जैसे कोढ़, चेचक, तपेदिक आदि निकल पड़ीं और उन्होंने उस स्त्री और उसके बच्चों को वहीं मार दिया।

यह कहानी हमें कई शिक्षा देती है। पहली बात तो हमको लालची नहीं होना चाहिये। क्योंकि पहला वाला बच्चा लालची नहीं था इसी लिये वह दूसरों का आदर पा सका।

दूसरी बात यह कि बिना सोचे समझे दूसरों की नकल करने की आदत अच्छी नहीं होती। दूसरी मॉ ने अपने बच्चे से छोटी पत्नी के बच्चे की नकल करवायी तो क्या फल पाया।

और तीसरे हमें दूसरों के उपकारों का धन्यवाद जरूर देना चाहिये।

5 जादुई काशीफल[15]

बच्चों, बच्चे तो जिद्दी होते ही हैं तो देखो कि एक बच्चे की जिद ने क्या क्या गुल खिलाये।

उत्तरी नाइजीरिया में एक स्त्री अपनी बेटी फुरैरा[16] के साथ शाम को घर लौट रही थी। सुबह से शाम तक के काम के बाद अब उसे घर पहुँचने की जल्दी थी इसलिये वह जल्दी जल्दी घर की तरफ जा रही थी।

फुरैरा भी उसके साथ रेत से भरे रास्ते पर कूदती फाँदती खुशी से भागी चली जा रही थी।

एकाएक फुरैरा रुक गयी। उसको सड़क के पास घास के बीच में एक छोटा सा काशीफल[17] दिखायी दे गया था। वह चिल्लायी — "माँ, देखो तो यह कितना सुन्दर काशीफल है, यह मुझे तोड़ दो न।"

माँ क्योंकि आगे आगे चल रही थी, पलट कर लौटी और काशीफल देखा तो बोली — "बेटी, अभी इसे रहने दो, यह अभी छोटा है। जब यह बड़ा हो जायेगा तब इसे तोड़ेंगे क्योंकि तब इसकी भाजी भी अधिक बनेगी।

[15] Magical Pumpkin – a folktale from Nigeria, Western Africa.
[16] Phurera – name of the daughter
[17] Pumpkin – a kind of vegetable – see its picture on the next page.

तुम अगर चाहो तो इसके पास में लगा यह बड़ा वाला काशीफल अभी तोड़ लेते हैं। हम इसे आज रात के खाने में बना लेंगे।" यह कहते हुए उसने पास में लगा वह बड़ा काशीफल तोड़ लिया और आगे चल दी।

पर फुरैरा को तो अपना वाला छोटा वाला काशीफल चाहिये था। वह रो पड़ी और उसी छोटे वाले काशीफल के लिये जिद करने लगी।

उसकी मॉ ने उसे बहुत समझाया कि इतना छोटा काशीफल तोड़ना बेवकूफी है। कुछ दिन बाद जब वह बड़ा हो जायेगा तब तोड़ लेंगे परन्तु वह न मानी।

मॉ भी उसकी बात को सुना अनसुना कर आगे चल दी। बच्ची भी रोती हुई मॉ के पीछे पीछे घर पहुॅची।

रात को फुरैरा ने खाना खाने से मना कर दिया। पिता अपनी बेटी को बहुत प्यार करता था सो उसके पिता ने पूछा — "क्या बात है आज मेरी बिटिया क्यों नाराज है?"

मॉ ने जवाब दिया — "आज जब हम लोग घर वापस लौट रहे थे तो इसने एक छोटा सा काशीफल देख लिया उसी के लिये जिद कर रही है। मैंने उसको छोटा होने की वजह से नहीं तोड़ा इसी लिये रो रही है।"

पिता ने कहा — "रो मत बेटी, कल सुबह ही हम अपनी बेटी को वह काशीफल ला देंगे। आजा, अब खाना खा ले।" फुरैरा ने तुरन्त ही अपने ऑसू पोंछ लिये और अपने पिता के साथ खाना खाने बैठ गयी।

सुबह वह सबेरे ही उठ गयी और फिर से काशीफल के लिये जिद करने लगी। आखिर उसकी मॉ को अपना सारा काम छोड़ कर काशीफल लाने जाना ही पड़ा।

काशीफल अभी भी उसी जगह लगा हुआ था। मॉ ने जल्दी से काशीफल तोड़ कर फुरैरा के हाथ में दे दिया और घर की तरफ वापस लौट पड़ी।

पर यह क्या? काशीफल फुरैरा के हाथ से नीचे जमीन पर गिर पड़ा और उसके पीछे पीछे चलने लगा। अब क्या था फुरैरा आगे आगे और काशीफल उसके पीछे पीछे।

फुरैरा ने एक नाला कूद कर पार किया तो काशीफल ने भी उसके ऊपर से कूद लगा दी। फुरैरा ने इस प्रकार का चलता फिरता काशीफल पहले कभी नहीं देखा था।

वह खुशी से चिल्लायी — "देखो न मॉ मेरे इस काशीफल को किस तरह यह मेरे पीछे पीछे चल रहा है। तुमने इस काशीफल को मेरे लिये तोड़ा कितना अच्छा किया। तुम कितनी अच्छी हो मॉ।"

यह सुन कर तो मॉ आश्चर्य में पड़ गयी। उसने पीछे मुड़ कर देखा तो सचमुच ही काशीफल फुरैरा के पीछे पीछे लुढ़कता हुआ चला आ रहा था।

उसने भी पहले कभी चलता फिरता काशीफल नहीं देखा था सो इस काशीफल को इस तरह दौड़ते देख कर उसे भी बहुत आश्चर्य हो रहा था। पर यह काशीफल तो सचमुच ही लुढ़कता हुआ चला आ रहा था।

मॉ ने जंगल से घर तक कई बार उसको अपने हाथ में उठाने की कोशिश की पर वह बार बार उसके हाथ से फिसल जाता और उन लोगों के पीछे पीछे चलने लगता।

फुरैरा अपना काशीफल पा कर बहुत खुश थी। वह दौड़ती हुई अपने घर के ऑगन में बैठे अपने पिता से लिपट गयी और फिर घर के सभी लोगों से बोली — "आओ और आ कर सभी लोग मेरा काशीफल देखो। यह जंगल से घर तक सारे रास्ते मेरे पीछे पीछे चल कर आया है।"

यह सुन कर सभी लोग वहॉ उस अजीब काशीफल को देखने के लिये दौड़े आये।

काशीफल अभी भी जमीन पर इधर उधर लुढ़क रहा था। जैसे ही किसी ने उसको अपने हाथ में उठाने की कोशिश की वह उसी के हाथ से फिसल गया।

घर में काशीफल का एक अजीब सा तमाशा बन गया। सभी उस चलते फिरते काशीफल को आश्चर्य से देख रहे थे।

पर फुरैरा का पिता यह सब देख कर खुश नहीं था। वह बहुत चिन्तित था क्योंकि उसको मालूम था कि ऐसे जादुई काशीफल के अन्दर शैतान हुआ करता है और अब वह पछता रहा था कि उसने फुरैरा की मॉ को काशीफल तोड़ने के लिये क्यों कहा।

पर अब क्या हो सकता था अब तो वह केवल उससे बचने की तरकीब ही सोच सकता था।

इतने में काशीफल बोला — "फुरैरा, फुरैरा, मुझे भूख लगी है मुझे खाने के लिये मॉस चाहिये।" यह कह कर वह फुरैरा की एड़ी काटने लगा।

फुरैरा के पिता ने फुरैरा से कहा — "बेटी, जहॉ भेड़ें बॅधी हैं तुम वहॉ भाग जाओ। काशीफल भी तुम्हारे पीछे पीछे वहीं भाग जायेगा।"

फुरैरा यह सुनते ही भेड़ों के बाड़े की तरफ भागी तो काशीफल भी फुरैरा के पीछे पीछे बाड़े में घुस गया और उसने भेड़ों को साबुत का साबुत ही निगलना शुरू कर दिया।

फुरैरा बाड़े से घर वापस आयी तो काशीफल भी भेड़ों को खा कर घर वापस आ गया और बोला — "फुरैरा, मुझे अभी और मॉस चाहिये, मैं अभी और भूखा हूॅ।" और ऐसा कह कर वह फिर फुरैरा के टखने की तरफ बढ़ा।

अबकी बार फुरैरा के पिता ने कहा — "फुरैरा, भाग जा जहाँ गायें बँधी हैं।" फुरैरा तुरन्त ही गायों के बाड़े की तरफ भाग गयी। काशीफल भी उसके पीछे पीछे चल दिया।

जब तक फुरैरा घर वापस आयी, काशीफल भी सारी गायें खा कर घर वापस आ गया और उसकी टाँग की तरफ बढ़ते हुए बोला — "मुझे अभी और माँस चाहिये फुरैरा।"

अबकी बार फुरैरा के पिता ने बड़े दुख के साथ कहा — "फुरैरा, तुम तुरन्त ही ऊँटों की तरफ भाग जाओ।"

फुरैरा यह सुनते ही तुरन्त ऊँटों की तरफ भाग गयी पर जब तक वह घर वापस आयी काशीफल भी ऊँटों को खा कर घर वापस आ गया था।

अबकी बार काशीफल फुरैरा के घुटने की तरफ बढ़ता हुआ बोला — "मुझे अभी और माँस चाहिये फुरैरा।"

इस बार फुरैरा को गुस्सा आ गया़ वह चिल्ला कर बोली — "अब और माँस कहाँ है? तुमने सारा माँस तो खा लिया।"

काशीफल बोला — "तब अब मैं तुम्हें खाऊँगा।" और यह कह कर उसने फुरैरा के घुटने पर बहुत जोर से काटा।

पिता ने तुरन्त ही काशीफल में अपने पैर से एक ज़ोर की ठोकर मारी मगर काशीफल पर तो कोई असर ही नहीं पड़ा।

इतने में अन्दर से उनकी पालतू बकरी आ गयी और उसने अपने सींगों से काशीफल में एक उछाल मारी। काशीफल नीचे तो

जा गिरा पर गुस्से में भर कर वह बकरी की तरफ दौड़ा और बोला — "मुझे और मॉस चाहिये।"

इस बार बकरी ने अपने सींगों से पूरी ताकत के साथ उसको फिर से एक उछाल मारी तो काशीफल एक ज़ोर की आवाज के साथ जमीन पर गिर गया और फट गया।

और यह क्या? काशीफल के अन्दर से सारे जानवर ऐसे के ऐसे बाहर आ गये जैसे उसने खाये थे। पिता ने सारे जानवर उनकी जगहों पर बॉध दिये।

फुरैरा अपनी बकरी को बहुत प्यार कर रही थी क्योंकि उसने उसकी जान बचायी थी। मॉ ने उस टूटे काशीफल के सारे टुकड़ों को जला कर राख कर दिया।

तो यह करामात दिखायी फुरैरा की जिद ने और उसके जादुई काशीफल ने।

6 लड़की, मेंढक और सरदार का बेटा[18]

बहुत पुरानी बात है कि नाइजीरिया देश के एक गॉव में एक आदमी रहता था जिसके दो पत्नियॉ थीं। उसकी दोनों पत्नियों के एक एक बेटी थी।

वह आदमी अपनी पहली पत्नी और उसकी बेटी को तो बहुत प्यार करता था पर दूसरी पत्नी की वह बिल्कुल भी परवाह नहीं करता था।

कुछ दिन बाद उस आदमी की दूसरी पत्नी मर गयी और उसकी दूसरी पत्नी की बेटी अब बिना मॉ की रह गयी। अब वही लड़की घर का सारा काम करती थी।

उसकी सौतेली मॉ उसे हमेशा ही पानी लाने और जंगल से लकड़ी काटने के लिये भेजा करती थी। वह घर के सब लोगों के लिये खाना भी बनाती थी मगर उसको अपने खाने के लिये केवल जूठन ही मिला करती थी।

उस लड़की का रिश्ते का एक भाई था जो उसकी इस हालत पर बहुत तरस खाया करता था। उसने उस लड़की को कह रखा था कि जब भी कभी तुम अच्छा खाना खाना चाहो तो मेरे घर आ जाया करो सो अक्सर वह अपने भाई के घर खाना खाने चली जाया करती थी।

[18] A Girl, Frog and a Son of the Chief – a folktale of Nigeria, West Africa.

घर की बची हुई जूठन वह साथ ले जाती थी पर उसे वह रास्ते के एक तालाब में फेंकती जाती। उस तालाब में कुछ मेंढक रहते थे, वे आते और उस जूठन को खा लेते थे। यह सब ईद आने तक चलता रहा।

कुछ दिन बाद ईद आयी। ईद की शाम को जब वह अपने भाई के घर जा रही थी तो उस तालाब पर एक मेंढक बैठा उस लड़की का इन्तजार कर रहा था।

लड़की ने रोज की तरह खाने की जूठन के टुकडे तालाब की तरफ फेंक दिये और जाने लगी तो मेंढक बोला — "बेटी, तुमने हम लोगों पर बहुत दया की है इसलिये अगर तुम कल सुबह यहॉ आ जाओ तो मैं तुम्हारी दया के बदले में तुम्हें कुछ देना चाहता हूँ।"

लड़की यह सुन कर बहुत खुश हुई और अगले दिन आने का वायदा करके अपने घर चली गयी।

अगले दिन वह लड़की जैसे ही तालाब पर जाने लगी कि उसकी सौतेली मॉ ने कहा — "तू तो बहुत ही आलसी है, न तो जंगल से लकड़ी काटी, न तालाब से पानी भरा, न खाना ही बनाया और सुबह सुबह न जाने कहॉ चल दी।"

बेचारी लड़की ने पहले अपना सारा काम खत्म किया और फिर जल्दी जल्दी तालाब की तरफ चल दी।

वहॉ वह कल वाला मेंढक बैठा उसका इन्तजार कर रहा था। वह बोला — "अरे, तुम अब आ रही हो? मैं तो सुबह से तुम्हारा इन्तजार कर रहा हूॅ।"

लड़की यह सुन कर रुऑसी सी बोली — "माफ कर दो बाबा, मैं तो गुलाम हूॅ न इसी लिये ऐसा हुआ।"

मेंढक ने पूछा — "यह कैसे?"

लड़की बोली — "मेरी मॉ मर गयी है, और मेरे भाई की शादी हो चुकी है इसलिये मैं अपनी सौतेली मॉ के पास रहती हूॅ। इसी लिये मैंने कहा था कि मैं तो गुलाम हूॅ।

रोज सुबह मुझे जंगल से लकड़ी लाना, तालाब से पानी भरना तथा सबका खाना बनाना आदि बहुत से काम करने होते हैं, और इस सबके बाद भी खाने को मिलती है मुझे केवल जूठन और बचा खुचा खाना।"

मेंढक बोला — "अच्छा, मेरा हाथ पकड़ो।" लड़की ने उसकी तरफ अपना हाथ बढ़ाया और मेंढक उसका हाथ पकड़ कर तालाब में कूद गया।

पानी में पहुॅचते ही वह लड़की को निगल गया और जब वह फिर से सूखी जमीन पर आया तो उसने उस लड़की को बाहर निकाल कर खड़ा कर दिया।

वह अपने साथ कीमती कपड़े, गहने और सोने और चॉदी की दो जोड़ी जूतियॉ भी लाया था।

वह बोला — "अब तुम इन कपड़ों को पहन कर किसी भी मौके पर कहीं भी जा सकती हो पर एक बात का खयाल रखना कि जब वह मौका खत्म हो जाये और तुम घर वापस लौटो तो अपने दाहिने पैर का सोने का जूता वहीं छोड़ आना।"

"मैं समझ गयी बाबा।" कह कर वह लड़की तैयार हुई और चल दी। उस दिन गॉव के सरदार के बेटे के घर दावत थी, वह वहीं चल दी।

वहॉ जा कर उसने देखा कि एक बहुत बड़े कमरे मे बहुत सारे लड़के और लड़कियॉ नाच रहे थे सो वह भी उधर ही चल दी।

सरदार के बेटे ने इस लड़की को देखा तो अपने दरबारियों द्वारा उसको अपने पास बुला भेजा। उसको अपने पास सिंहासन पर बिठाया। बहुत देर तक वे दोनों बातें करते रहे।

काफी देर बाद लड़की बोली — "मुझे अब जाना चाहिये, काफी देर हो गयी है।"

सरदार के बेटे ने उससे पूछा — "तो तुम मुझसे प्रेम करती हो न?"

लड़की केवल मुस्कुरायी और अपने दाहिने पैर का जूता वहीं छोड़ कर वहॉ से चल दी। कुछ दूर तक तो सरदार का बेटा उसके साथ गया पर फिर वह अकेली ही तालाब की तरफ चल दी।

वहॉ मेंढक उसका इन्तजार कर रहा था। पहले की तरह मेंढक ने उसका हाथ पकड़ा और पानी में कूद गया। जब वह दोबारा जमीन पर वापस आयी तो उसने अपने वही फटे पुराने कपड़े पहने और घर वापस चली गयी।

जब वह लड़की घर पहुॅची तो उसने अपनी मॉ से कहा कि उसकी तबियत ठीक नहीं थी।

सौतेली मॉ ने उसे खूब डॉटा और कहा — "तू बहुत आलसी होती जा रही है। घर में घर का काम तो करती नहीं है और बाहर अपना समय गॅवाती फिरती है। आज तुझे खाना नहीं मिलेगा।"

अगले दिन सरदार के बेटे ने अपने पिता से कहा — "बाबा, कल मैं एक लड़की से मिला था जिसके पास सुनहरी और रुपहली जूतियॉ थीं मैं उसी से शादी करना चाहता हूॅ।"

सरदार ने पूछा — "कौन है वह लड़की और कहॉ रहती है?"

बेटा बोला — "यह तो मुझे पूछने का ध्यान ही नहीं रहा। पर हॉ याद आया, वह अपना एक सुनहरी जूता छोड़ गयी है। आप सारे गॉव की लड़कियों को बुला लीजिये। वह जूता जिसके पैर में भी आ जायेगा वह वही लड़की होगी।" सरदार राजी हो गया।

सरदार ने ढोल पीट कर गॉव की सारी लड़कियों को बुलवा लिया। सरदार के गॉव में बूढ़ी जवान, छोटी लम्बी, मोटी पतली सभी तरह की लड़कियॉ आ गयीं।

सरदार के बेटे ने हर लड़की को वह जूता पहना कर देखा पर वह जूता किसी भी लड़की के पैर में नहीं आया। सरदार का बेटा बहुत परेशान हुआ।

तभी एक दरबारी ने आ कर कहा — "सरकार, वह बिन मॉ की बेटी तो आयी ही नहीं अभी तक।"

सरदार के बेटे ने अनमनेपन से कहा — "ठीक है, उसको भी बुला लो।" सो उस लड़की को भी बुला लिया गया।

जब वह लड़की आयी और वह जूता उसके पैर की तरफ बढ़ाया गया तो वह जूता फुदक कर अपने आप ही उसके पैर में चला गया।

सरदार के बेटे को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बोला — "ओह, तो तुम ही हो मेरी होने वाली पत्नी।"

इस पर लड़की की मॉ बोली — "अच्छा तो तू ही वह आलसी लड़की थी जो अपना जूता यहॉ छोड़ गयी थी।"

अगले दिन ही सरदार के बेटे ने उस लड़की से शादी कर ली और वह लड़की उसके घर चली गयी।

शादी के बाद जब वह अपने पति के घर जाने लगी तो रास्ते में उसने मेंढक को देखा तो बोली — "आओ बाबा"।

मेंढक बोला — "अभी नहीं, आज रात को हम तुम्हारे घर आयेंगे और तुम्हारे लिये कुछ भेंटें लायेंगे।"

रात होने पर उस मेंढक ने और मेंढकों को बुलाया और कहा — "देखो, हमारी बेटी जो रोज हमको खाना खिलाती थी उसकी आज शादी हो गयी है। अब मैं यह चाहता हूँ कि आप सब लोग उसको अपनी अपनी हैसियत के अनुसार उसे कुछ भेंट दें।"

सभी मेंढकों ने उसको कुछ न कुछ दिया। और वह बड़ा मेंढक उन सारी भेंटों को ले कर उस लड़की के पास पहुँचा।

उन भेंटों में एक चाँदी का पलंग था, तीन और पलंग थे दूसरी धातुओं के बने हुए जो काले, लाल और सफेद रंग की थीं। रेशम की चादरें, ऊनी कम्बल और बहुत सारी वस्तुऐं थी।

मेंढक ये सब भेंट देने के बाद बोला — "जब तुम्हारे पति की दूसरी पत्नियाँ तुमसे मिलने आयें तो उनको दस दस हजार कौड़ियाँ और दो दो टोकरी कोला नट[19] देना।

और जब उसकी रखैलें मिलने आयें तो उनको पाँच पाँच हजार

कौड़ियाँ और एक एक टोकरी कोलानट देना। और जब उसकी नौकरानियाँ मिलने आयें तो उनसे कहना

[19] In very olden days Cowries, a kind of sea shells, were used as money. And Kola Nut is a kind of seed of a special fruit, and is offered to people at the time of meeting each other as a greeting, such as betel nut in India. It is also eaten in the same way. See the pictures above – left one is of cowries and the right one id of Kola Nut. See the picture of Cowries on left, and of Kola Nut on right.

कि वे इस कैलैबाश[20] में से कितने भी कोलानट अपने आप ही ले लें।

उस लड़की ने वैसा ही किया जैसा उस मेंढक ने उससे कहा था।

मेंढक जब दोबारा उससे मिलने आया तो उस लड़की ने उससे कहा — "बाबा, मैं चाहती हूँ कि मेरे ऑगन में एक कुँआ हो और आप सब यहीं रहें।"

मेंढक बोला — "ठीक है, तुम अपने पति से कहो और अगर वह चाहेगा तो हम यहीं आ जायेंगे।"

उस लड़की ने अपने पति से कहा तो उसके पति ने वहीं ऑगन में एक कुआँ खुदवा दिया और फिर सारे मेंढक वहीं आ कर रहने लगे।

[20] Calabash is a kind of outer cover of pumpkin like fruit which is dried and is used to keep dry and wet things. It looks like an Indian clay pitcher. See the picture above.

7 जुयिन गाटान फ़ारा[21]

एक बार उत्तरी नाइजीरिया के एक गॉव में बहुत ही अमीर आदमी रहता था। उसके घर में तीस नौकर चाकर काम करते थे। उसका एक बेटा था जिसका नाम था जुयिन गाटान फ़ारा[22]।

एक दिन पिता और उसका बेटा दोनों अपने खेत में खड़े थे कि उधर से व्यापारियों का एक कारवॉ निकला।

बेटे ने अपने पिता से पूछा — "पिता जी, ये कौन लोग हैं?"

पिता ने जवाब दिया — "बेटा, ये लोग व्यापारी हैं व्यापार करने जा रहे हैं।"

फ़ारा ज़ोर से चिल्लाया — "ओ व्यापारियो, ज़रा रुक जाइये, आप लोग कहॉ जा रहे हैं?"

व्यापारी बोले — "हम लोग अशान्ती देश[23] जा रहे हैं।"

[21] Juyin Gatan Fara – a folktale of Hausa people from Northern Nigeria, Western Africa

[22] Juyin Gatan Fara in Hausa language means to sell something at a loss in expectation of a big profit.

[23] Today's Ghana country. In olden times many caravans used to travel from Egypt to Ashanti country (Ghana) via Hausa land in Northern Nigeria.

फ़ारा ने अपने पिता से कहा — "मैं भी इन लोगों के साथ अशान्ति देश जाना चाहता हूँ।"

पिता ने कहा — "जरूर जाओ बेटा, परन्तु रास्ते के लिये कुछ साथ तो ले लो। यह मेरी घोड़ी ले लो इसे बेच कर तुम कुछ पैसा कमा सकते हो।"

फ़ारा घोड़ी ले कर कारवॉ के साथ हो लिया।

पहले शहर में पहुँच कर फ़ारा ने देखा कि एक आदमी का पैर घायल है। उसने उससे पूछा "यह कैसे हो गया।"

आदमी बोला — "मैं घास काट रहा था कि चाकू से अपना पैर काट बैठा। अब मैं चल भी नहीं सकता।" फ़ारा ने अपनी घोड़ी उसे दे कर उससे घास काटने का चाकू ले लिया।

अगले शहर में पहुँच कर फ़ारा ने एक आदमी को एक कुत्ते के साथ देखा तो उसने चाकू के बदले में उससे कुत्ता ले लिया।

अगले शहर में फ़ारा ने व्यापारियों के सरदार से कहा कि वह दूसरे व्यापारियों के साथ शहर के बाहर नहीं रहेगा। वह शहर के अन्दर ही रहना चाहता था सो वह शहर के अन्दर ही रुक गया।

ठहरने के लिये एक घर मिल जाने के बाद उसने कुत्ता घर में बॉध दिया और बाहर घूमने चला गया।

उस घर में ग्वारी जाति[24] की एक स्त्री रहती थी। जब उस स्त्री ने कुत्ते को देखा तो कुत्ते को मार कर आग पर भूनने को रख

[24] Gwari tribe eats dogs too.

दिया। जब तक फ़ारा घूम कर आया तब तक वह स्त्री कुत्ते के सिर को छोड़ कर बाकी सारा कुत्ता खा चुकी थी। फ़ारा ने यह सब कुछ देख लिया पर वह बोला कुछ भी नहीं।

अगले दिन फ़ारा उस घर के मालिक के पास गया और बोला — "मैंने अपना सारा सामान बॉध लिया है, मैं जा रहा हूँ।"

मालिक ने कहा — "ठीक है, तुम्हारी यात्रा शुभ हो और तुम सही सलामत वापस आओ।"

फ़ारा बोला — "आप यह कैसे उम्मीद करते हैं कि मैं सही सलामत वापस आऊँगा जबकि मेरा कुत्ता खा लिया गया है।"

मालिक ने पूछा — "किसने खाया तुम्हारा कुत्ता?"

फ़ारा बोला — "आप खुद ही देख लें, यह इसका सिर है।"

मालिक घर में ज़ोर से चिल्लाया — "किसने खाया यह कुत्ता?" फिर उसने अपनी नौकरानी की तरफ देख कर पूछा — "क्या तुमने?"

नौकरानी डरते डरते बोली "जी बाबा।"

मालिक बोला — "अब मैं क्या कह सकता हूँ।"

फ़ारा बोला — "अब आप यह कह सकते हैं कि इस कुत्ते के बदले में इस स्त्री को ले लो।"

मालिक बोला — "ठीक है, अगर तुम्हारी यही इच्छा है तो ले जाओ इस स्त्री को।"

फ़ारा ने उस नौकरानी को लिया और उस कारवॉ के साथ चल दिया। जब वे दूसरे शहर में पहुँचे तो उन्होंने देखा कि गारडवा जाति[25] का एक आदमी सड़क के किनारे खुदाई कर रहा है।

फ़ारा ने उससे पूछा — "तुम यहॉ खुदाई क्यों कर रहे हो?"

वह आदमी बोला — "सॉप के लिये।"

फ़ारा ने कहा — "तुम सॉप मुझे दे दो बदले में मैं तुमको यह नौकरानी दे दूँगा। उस आदमी ने सॉप फ़ारा को दे दिया और फ़ारा ने उस आदमी से सॉप ले कर वह स्त्री उस आदमी को दे दी।

फ़ारा ने सॉप को अपने चमड़े के थैले में रखा और थैले का मुँह अच्छी तरह बॉध कर वह फिर अपने कारवॉ की तरफ चल दिया।

कारवॉ में जा कर वह कारवॉ के सरदार से बोला — "भगवान की दया से मैं वापस आ गया हूँ। तुम मेरा यह थैला अपने पास रख लो और देखो इस थैले को किसी को छूने भी न देना।"

सरदार ने फ़ारा से तो हॉ कर दी परन्तु फ़ारा के जाने के बाद वह अपने साथियों से बोला — "इस थैले में ऐसा क्या भरा है जो यह लड़का हम लोगों को इसे छूने भी नहीं देता।"

ऐसा कह कर उसने जैसे ही थैला खोला सॉप उसमें से निकल कर झाड़ियों में चला गया।

[25] Gardawa tribe people are very skilled in beating drums, dancing and showing snakes games.

जब फ़ारा लौटा तो सरदार से उसने अपना थैला माँगा। सरदार ने नीची निगाहों से फारा का थैला वापस कर दिया।

थैला लेते हुए फ़ारा बोला — "मैंने तो पहले ही कहा था कि मेरा थैला कोई न छुए मगर मुझे लगता है कि यह खाली है। कोई बात नहीं माडुगू[26], तुम्हें इसके बदले में कुछ न कुछ तो देना ही पड़ेगा। याद रखना जब मैं शुरू में आया था तो मेरे पास एक बहुत बढ़िया घोड़ी थी।"

"ठीक है ठीक है।" कह कर सरदार ने उसे दो घोड़े दे दिये।

अगले दिन कारवाँ अशान्ति देश में पहुँचा तो सारे व्यापारी सामान खरीदने और बेचने में लग गये। लेकिन फ़ारा ने अपने घोड़े नहीं बेचे।

कारवाँ जब वापस लौट रहा था तभी भी वे उसके साथ ही थे। बीच में कारवाँ एक दो दिन के लिये किसी शहर में रुका तो फ़ारा फिर वहाँ घूमने चल दिया।

चलते चलते वह एक बुढ़िया के पास पहुँचा जो ज़हर बना रही थी। वह बोला — "माँ जी, क्या मुझे थोड़ा सा पानी पीने को मिल सकता है?"

बुढ़िया बोली — "हाँ हाँ क्यों नहीं। पानी उधर रखा है तुम खुद ही ले लो।"

[26] Madugu

"नहीं मॉ तुम खुद अपने हाथ से ही दे दो।" बुढ़िया बोली "ठीक है पर तुम मेरे इस बरतन में झॉक कर मत देखना।"

फ़ारा ने सोचा कि इस बरतन में झॉकने में क्या हो सकता है सो जैसे ही बुढ़िया पानी लाने के लिये उठी उसने उस बरतन को खोल कर उसमें झॉका तो वह अन्धा हो गया।

बुढ़िया पानी ले कर वापस आयी तो देखा कि लड़का अन्धा हो चुका है। वह सब समझ गयी और बोली — "ओह, लगता है तुमने इस बरतन में झॉका है।"

फारा बोला — "हॉ मॉ जी, आप तो जानती हैं कि हम घूमने वाले लोग किस प्रकार के होते हैं। जिस काम को उनको मना किया जाता है वे उसी काम को करते हैं। लेकिन अब मेरे अन्धेपन की कुछ दवा तो बताओ।"

बुढ़िया बोली — "अगर मैं तुम्हें तुम्हारे अन्धेपन की दवा बताऊॅगी तो तुम मुझे क्या दोगे?"

फ़ारा बोला — "देखिये ये दोनों घोड़े मेरे हैं। आप मुझे दवा देंगी तो इनमें से एक घोड़ा आप ले लीजियेगा।"

इस पर बुढ़िया ने एक बरतन लड़के को दे कर उसको ऑखों की रोशनी लाने का तरीका बताया। फ़ारा वह बरतन ले कर चल दिया और कारवॉ में जा कर मिल गया।

लोगों ने कानाफूसी की कि फ़ारा के पास एक बरतन है और इसने अपने घोड़ों का न जाने क्या किया।

उस रात वह कारवॉ के सरदार के पास गया और बोला — "माडुगू, ज़रा मेरा यह बरतन रख लो मैं अभी आता हूँ और देखना इसको कोई खोले नहीं।"

लेकिन जैसे ही फ़ारा वहॉ से गया सरदार ने तुरन्त ही वह बरतन खोल कर उसमें झॉका। उस बरतन में झॉकते ही वह अन्धा हो गया।

अब उसने अपने एक साथी उबान्डावाकी[27] को बुला कर कहा — "उबान्डावाकी, ज़रा देखना तो इसमें क्या है।"

उबान्डावाकी ने जैसे ही उस बरतन में झॉका तो वह भी अन्धा हो गया। इस प्रकार वे एक दूसरे को बुलाते रहे और उस बरतन में झॉकने के लिये कहते रहे तो सभी अन्धे हो गये।

जब फ़ारा लौटा तो उसने देखा कि कारवॉ के सारे लोग अन्धे हो चुके हैं तो बोला — "मैंने तुम लोगों से पहले ही मना किया था कि इस बरतन को खोलना नहीं और इसमें झॉकना नहीं। तुम लोग अपनी आदत से बाज़ नहीं आये और अब तुम सब अन्धे हो गये हो।"

अगले दिन जब सब लोग वापस लौटने के लिये तैयार हो रहे थे तो फ़ारा बोला — "मैं अशान्ति भी हो आया और सही सलामत भी आ गया।

[27] Ubandawaki

मेरे पास व्यापार के लिये तो कुछ नहीं था पर कम से कम मैं अपनी तन्दुरुस्ती तो वापस ले आया हूँ पर तुम लोग... ।" यह बात उसने सभी लोगों से कही।

जब एक दिन की यात्रा रह गयी तो सरदार फ़ारा से बोला — "फ़ारा, मैं तुमसे ऑखों की दवा की भीख मॉगता हूँ।"

तो फ़ारा बोला — "अगर मैं तुम्हें ऑखों की दवा दूँ तो तुम मुझे क्या दोगे?"

सरदार बोला — "मैं तुमको अपना सारा सामान दे दूँगा।"

फारा ने पूछा — "कितने गधे है तुम्हारे पास?"

"एक सौ।"

फारा बोला — "ठीक है, तुम मुझे चालीस गधे सामान दे दो, तुम्हें दवा मिल जायेगी।"

इस प्रकार फारा ने सरदार से चालीस गधे सामान ले कर सरदार की ऑखें ठीक कर दीं। इसी प्रकार सभी ने उसे, किसी ने तीस, किसी ने बीस, किसी ने दस गधे सामान दे कर अपनी अपनी ऑखें ठीक करायीं।

अगले दिन जब वह सारा सामान ले कर घर चला तो लोग बोले — "देखो, फ़ारा कितना होशियार है वह केवल एक घोड़ी घर से ले कर चला था और अब कितना सारा सामान ले कर घर वापस आया है।

8 कुत्ता और शेर[28]

एक बार की बात है कि एक दिन एक कुत्ता खाने की खोज में जंगल तक पहुँच गया। सामने बड़ा सा जंगल देख कर वह घबरा गया पर क्योंकि वह भूखा था इसलिये वह जल्दी जल्दी खाना खोजने लगा।

कुछ ही देर में उसको एक शेर की दहाड़ सुनायी दी। वह डर गया। कुत्ते की सॉस रुक गयी उसने सोचा आज तो मैं गया। अभी वह यह सोच ही रहा था कि वह क्या करे कि इतने में उसको सामने पड़ीं कुछ सूखी हड्डियॉ दिखायी दीं।

उनको देख कर उसके दिमाग में कुछ आया और उसने उसमें से एक हड्डी उठायी और शेर की ओर पीठ करके बैठ कर उसे चबाने लगा।

जब शेर काफी पास आ गया तो वह ज़ोर ज़ोर से बोला — "वाह शेर का मॉस खाने का तो मजा ही कुछ और है। एक शेर और मिल जाये तो बस पूरी दावत ही हो जाये।"

यह सुन कर शेर तो सकते में आ गया। उसने सोचा "अरे यह कुत्ता तो शेर का शिकार करता है जान बचा कर भाग लो वरना यह तो मुझे भी खा जायेगा।" और शेर वहॉ से उलटे पैरों चम्पत हो लिया।

[28] Dog and Lion – a folktale from Nigeria, Western Africa

पेड़ पर बैठा एक बन्दर यह सब तमाशा देख रहा था। उसने सोचा यह मौका तो बहुत अच्छा है। मैं शेर को जा कर इस कुत्ते की सारी कहानी बता देता हूँ। इससे शेर से मेरी दोस्ती हो जायेगी और फिर मेरा सारी ज़िन्दगी का खतरा दूर हो जायेगा।

वह फटाफट शेर के पीछे भागा। कुत्ते ने बन्दर को शेर के पीछे भागते हुए देखा तो तुरन्त समझ गया कि जरूर कहीं कोई गड़बड़ है। उधर बन्दर ने शेर को सब बता दिया कि उस कुत्ते ने उसे कैसे बेवकूफ़ बनाया है।

यह सुन कर शेर ज़ोर से दहाड़ा और बोला — "चल मेरे साथ अभी उसकी लीला खत्म करता हूँ।" यह कह कर उसने बन्दर को अपनी पीठ पर बैठाया और कुत्ते की ओर लपका।

बच्चो, जरा सोचो तो कुत्ते ने फिर क्या किया होगा?

कुत्ते ने शेर को आते देखा तो एक बार फिर उसकी तरफ पीठ कर के बैठ गया और ज़ोर ज़ोर से बोलने लगा — "उफ़, यह बन्दर भी बहुत ही आलसी है। इस बन्दर को भेजे हुए मुझे एक घन्टा हो गया अभी तक उससे एक शेर नहीं फॉसा जा सका। ऐसा कैसे चलेगा।"

यह सुनते ही शेर ने बन्दर को अपनी पीठ पर से उतार कर फेंक दिया और वह तो यह जा और वह जा। इस तरह कुत्ते ने दो बार शेर से अपनी जान बचायी।

9 मास्टर आदमी[29]

एक बार की बात है कि एक आदमी था जो बहुत ताकतवर था। जब वह आग जलाने के लिये लकड़ी इकट्ठी करने जाता था तो दूसरे लोगों से दुगुनी लकड़ी इकट्ठी करके लाता था। जब वह शिकार करने जाता तो एक बार में दो दो हिरन मार कर लाता था।

इस आदमी का नाम शाडूसा था और इसकी पत्नी का नाम शेटू[30] था। एक दिन शाडूसा ने अपनी पत्नी से कहा — "ज़रा मेरी ये मॉस पेशियॉ तो देखो। मैं दुनियॉ का सबसे ताकतवर आदमी हूँ। आज से तुम मुझको मास्टर आदमी कहा करो।"

यह सुन कर शेटू बोली — "बस बस अपनी यह बेवकूफी वाली शेखी बघारना छोड़ो। तुम खुद कितने भी ताकतवर क्यों न हो पर तुमसे भी ताकतवर कोई न कोई कहीं न कहीं जरूर होगा। ध्यान रखना एक दिन वह तुमको मिल ही जायेगा।"

एक दिन शेटू पड़ोस के एक गॉव में गयी। जब वह वहॉ से लौट रही थी तो उसको प्यास लग आयी तो वह एक कुँए के पास रुक गयी।

[29] Master Man – a folktale from Hausa Tribe of Nigeria, Africa. Told by Aaron Shepard. Published as a picture book. NY: HarperCollins. 2001.

[30] Shadusa – name of the strong man. His wife's name was Shettu.

उसने उस कुँए में बालटी डाली और पानी निकालने के लिये रस्सी खींची पर उसने उसको खींचने के लिये कितना भी ज़ोर लगाया पर वह बालटी नहीं खींच सकी।

तभी वहाँ अपनी कमर पर अपना बच्चा बाँधे और अपने सिर पर एक कैलेबाश[31] रखे एक स्त्री आयी।

शेटू बोली — "आज तुमको यहाँ पानी नहीं मिलेगा। मैंने इसमें से पानी निकालने के लिये अपनी बालटी डाली थी पर वह तो बाहर ही नहीं आती।"

दोनों स्त्रियों ने उसको खींचने के लिये ज़ोर लगाया पर वह बालटी तो हिल कर भी नहीं दी। स्त्री बोली "एक मिनट रुको।"

कह कर उसने अपनी कमर से बच्चे को खोल कर नीचे जमीन पर बिठाया और उसके हाथ में रस्सी देती हुई बोली — "बेटा मामा के लिये बालटी खींचो।"

बच्चे ने तुरन्त ही बालटी खींच दी और अपनी माँ का कैलेबाश भर दिया। फिर उसने दोबारा बालटी कुँए में डाली और एक बालटी पानी शेटू के लिये भी खींच दिया।

[31] Calabash is the dried outer skin of a pumpkin like vegetable. It may be used to keep dry and wet things and looks like clay pitcher of India. It comes in many sizes and shapes – see the picture of one its kinds above.

यह देख कर शेटू तो हैरान रह गयी। उसके मुँह से निकला — "अरे वाह यह तो बड़ी अजीब सी बात है। जिस बालटी को हम दोनों ही नहीं खींच सके उसे इस बच्चे ने खींच दिया।"

स्त्री बोली — "बहिन इसमें अजीब सी कोई बात नहीं है। मेरा पति मास्टर आदमी है।"

पानी पी कर शेटू घर आ गयी। जब वह घर पहुँची तो उसने अपने पति को रास्ते की घटना बतायी।

शाडूसा चिल्लाया — "मास्टर आदमी? वह अपने आपको मास्टर आदमी नहीं कह सकता। मास्टर आदमी तो मैं हूँ। लगता है कि मुझे उसे सबक सिखाना पड़ेगा।"

शेटू ने उससे प्रार्थना की — "नहीं नहीं ऐसा मत करना। अगर उसका बच्चा इतना ताकतवर है तो ज़रा सोचो कि उसका पिता कितना ताकतवर होगा। कहीं तुम उसके हाथों मारे न जाओ।"

पर शाडूसा बोला "देखेंगे।"

अगली सुबह शाडूसा जल्दी उठ कर उसी पड़ोस वाले गॉव की तफ चला जिसमें उसकी पत्नी गयी थी और उसी कुँए तक आ गया जहॉ उसने पानी खींचने की कोशिश की थी और उससे पानी नहीं खिंचा था।

उसने भी वहॉ आ कर पानी निकालने के लिये बालटी कुँए में डाली और उसकी रस्सी खींची। उसने भी कितनी कोशिश की पर वह भी वहॉ बालटी से पानी नहीं खींच सका।

तभी वह बच्चे वाली स्त्री वहॉ आ गयी और पानी खींचने लगी।

शाडूसा ने उससे कहा — "एक मिनट, तुम क्या कर रही हो।"

स्त्री ने कहा — "यह तो साफ दिखायी दे रहा है कि मैं पानी खींच रही हूॅ।"

शाडूसा बोला — "नहीं तुम पानी नहीं खींच सकतीं। बालटी ऊपर आती ही नहीं। मैं तो इसे कितनी देर से खींचने की कोशिश कर रहा हूॅ।"

स्त्री ने अपने बच्चे को नीचे बिठाया और उसके हाथ में रस्सी देते हुए उससे कहा कि वह उसके लिये पानी खींच दे। बच्चे ने तुरन्त ही रस्सी हाथ में पकड़ी और अपनी मॉ का कैलेबाश पानी से भर दिया।

यह देख कर शाडूसा के मुॅह से निकला — "वाह। पर यह उसने किया कैसे?"

स्त्री बोली — "यह तो उसके लिये बहुत आसान है जब किसी का पिता मास्टर आदमी होता है।"

शाडूसा ने यह सुन कर अपने गले का थूक सटका और घर वापस जाने की सोची पर फिर घर जाने की बजाय उसने अपनी छाती चौड़ी की और कहा — "मैं इस आदमी से मिलना चाहता हूॅ ताकि मैं उसे दिखा सकूॅ कि मास्टर आदमी कौन है।"

स्त्री बोली — "मैं ऐसा नहीं करूँगी। वह तुम्हारे जैसे आदमियों को तो खा जाता है। पर वह तुम जैसों के लिये ठीक भी है सो चलो मेरे साथ चलो।"

सो शाडूसा उस स्त्री के पीछे पीछे उसके घर की तरफ चल दिया। उसके घर के चारों तरफ बाड़ लगी थी। बाड़ के पीछे एक बहुत बड़ी आग जलाने की जगह थी और उसके पास ही हड्डियों का एक बहुत बड़ा ढेर पड़ा था।

उसको देखते ही शाडूसा ने पूछा — "यह सब क्या है?"

स्त्री बोली — "यह तुम अभी देखोगे। हमारा घर तो इतना छोटा है कि मेरे पति को अपने हाथी खाने के लिये घर के बाहर आना पड़ता है।"

तभी उनको इतनी ज़ोर की गरज की आवाज सुनायी दी कि शाडूसा को तो अपने कान बन्द कर लेने पड़े। फिर जमीन हिलना शुरू हुई और इतनी ज़ोर से हिली कि शाडूसा तो मुश्किल से ही खड़ा हो सका।

वह चिल्लाया — "यह क्या है?"

स्त्री बोली — "यह मास्टर आदमी है।"

शाडूसा फिर चिल्लाया — "ओह नहीं। तुम कुछ गलत नहीं कह रही थीं। मुझे तो यहाँ से भागना पड़ेगा।"

स्त्री बोली — "भागने के लिये तो अब देर हो चुकी है। पर कोई बात नहीं मैं तुमको छिपा देती हूँ।"

मकान के बाड़े के पास ही मिट्टी के कुछ बड़े बड़े बरतन रखे थे। वे आदमी की लम्बाई जितने इतने ऊँचे थे। शायद वे अनाज इकट्ठा करने के लिये थे।

उस स्त्री ने उसे एक बरतन पर चढ़ने और फिर उसमें उतर जाने में सहायता की। जब वह उस बरतन में बैठ गया तो उसके ऊपर उसने उसका ढकना ढक दिया।

शाडूसा ने तुरन्त ही एक डंडी से उस बरतन का ढकना उठा कर उसकी झिरी में से झॉकने की कोशिश की।

उसने देखा कि वह वहॉ अपने कन्धे पर एक मरा हुआ हाथी उठाये हुए उस घर के कम्पाउंड की तरफ आ रहा था। यह मास्टर आदमी था।

स्त्री ने पूछा — "प्रिय क्या तुम्हारा दिन अच्छा गुजरा?"

मास्टर आदमी बोला — "हॉ। पर मैं अपना तीर कमान तो यहीं भूल ही गया था। मुझको यह हाथी केवल अपने हाथों से ही मारना पड़ा।"

यह देख सुन कर शाडूसा डर के मारे थर थर कॉपने लगा। थर थर कॉपते हुए उसने देखा कि मास्टर आदमी ने वहीं कम्पाउंड मे एक बहुत बड़ी सी आग जलायी। उस हाथी को उस आग पर भूना और सिवाय उसकी हड्डियों के उसका वह एक एक टुकड़ा खा गया।

अचानक वह रुक गया और उसने इधर उधर कुछ सूँघ कर अपनी पत्नी से पूछा — "प्रिये मुझे यहाँ किसी आदमी की बू आ रही है।"

स्त्री बोली — "अभी तो यहाँ कोई आदमी नहीं है। हाँ तुम जब चले गये थे तब एक आदमी इधर से गुजरा था। तुम्हें उसी की बू आ रही होगी।"

मास्टर आदमी गरजा — "बड़ी बुरी बात है कि वह मेरे पीछे से गुजरा। नहीं तो वह तो खाने में मुझे बहुत स्वाद लगता।"

फिर वह जमीन पर लोटता रहा जब तक कि उसके खर्राटों से वहाँ पड़ीं सूखी पत्तियाँ नहीं काँपने लगीं।

स्त्री जल्दी से उस बरतन के पास गयी जिसमें शाडूसा बन्द था और उसका ढकना हटा कर बोली — "जल्दी निकलो यहाँ से। जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी यहाँ से भाग जाओ।"

शाडूसा तुरन्त उस बरतन में से कूदा और सड़क की तरफ भाग लिया। पर वह बहुत दूर तक नहीं गया था कि उसको एक गरज की आवाज सुनायी पड़ी और उसके नीचे की जमीन काँपने लगी। इसका मतलब यह था कि मास्टर आदमी उसके पीछे आ रहा था।

शाडूसा भागता ही रहा जब तक वह एक खेत तक नहीं आ गया जहाँ पाँच किसान अपना खेत जोत रहे थे।

उसको इतनी तेज़ भागते हुए देखा तो उनमें से एक ने पूछा — "इतनी जल्दी जल्दी कहाँ भागे जा रहे हो?"

शाडूसा हॉफते हुए बोला — "वह मास्टर आदमी मेरे पीछे आ रहा है।"

किसान बोला — "आराम से, आराम से। तुम चिन्ता न करो हम तुमको किसी को कोई नुकसान नहीं पहुँचाने देंगे।"

तभी उन्होंने सबने गरज की आवाज सुनी तो किसानों ने अपने अपने हल फेंक दिये और अपने अपने कान बन्द कर लिये।

उस किसान ने पूछा — "यह क्या था?"

शाडूसा बोला — "यही तो मास्टर आदमी था।"

"तो भागो अपनी जान बचा कर भागो।" कह कर सब किसान वहॉ से भाग लिये। शाडूसा भी भागते एक ऐसी जगह आ गया जहॉ दस मजदूर बोझा उठा कर जा रहे थे।

उनमें से एक मजदूर ने पूछा — "इतनी जल्दी जल्दी कहॉ भागे जा रहे हो?"

शाडूसा हॉफते हुए बोला — "वह मास्टर आदमी मेरे पीछे आ रहा है।"

मजदूर बोला — "आराम से, आराम से। तुम चिन्ता न करो हम सबसे कोई नहीं लड़ सकता।"

तभी उन्होंने सबने गरज की आवाज सुनी तो कई मजदूर तो उछल कर नीचे गिर गये और उनके हाथ से उनके गट्ठर गिर गये और उन्होंने अपने अपने कान बन्द कर लिये।

उस मजदूर ने पूछा — "यह क्या था?"

शाडूसा बोला — "यही तो मास्टर आदमी था।"

"तो अपनी जान बचा कर भागो।" और सब वहॉ से भाग लिये।

शाडूसा फिर भागा तो एक मोड़ पर आ कर पल भर के लिये रुक गया। वहीं रास्ते के पास एक अजनबी बैठा था और उस अजनबी के पास हाथी की हड्डियों का एक ढेर लगा हुआ था।

अजनबी चिल्लाया — "अरे इतनी जल्दी जल्दी कहॉ भागे जा रहे हो?"

शाडूसा हॉफते हुए बोला — "वह मास्टर आदमी मेरे पीछे आ रहा है।"

अजनबी बोला — "तुमको ऐसा नहीं कहना चाहिये क्योंकि मास्टर आदमी तो मैं हूँ।"

तभी शाडूसा के पीछे से गरज की आवाज आयी और एक बार फिर वह हवा में उछल गया। उस अजनबी ने उसको एक हाथ में पकड़ लिया। मास्टर आदमी उनके पास आ रहा था।

मास्टर आदमी चिल्लाया — "इस आदमी को मुझे दे दो।"

शाडूसा बोला — "यही तो मास्टर आदमी था।"

अजनबी मास्टर आदमी से चिल्ला कर बोला — "अगर तुम्हें इसे लेना हो तो आओ और आ कर ले लो।"

मास्टर आदमी शाडूसा के ऊपर कूदा पर अजनबी ने शाडूसा को उछाल कर एक पेड़ पर फेंक दिया। दोनों ताकतवर आदमी एक दूसरे से गुँथ गये और वहीं कुश्ती लड़ने लगे।

इस लड़ाई में जो आवाज हो रही थी उससे शाडूसा के कान बहरे हुए जा रहे थे और उससे जो धूल उठ रही थी उससे उसका गला घुटा जा रहा था। इस सबसे पेड़ भी हिल रहा था जिससे वह नीचे गिरने गिरने को हो रहा था।

शाडूसा उन दोनों को लड़ते हुए देख रहा था। दोनों ने एक एक कुदान भरी और दोनों हवा में उछल गये। वे हवा में ऊँचे और ऊँचे उठते चले गये और इतने ऊँचे उठ गये कि एक बादल से हो कर आसमान में गायब हो गये।

शाडूसा बहुत देर तक इन्तजार करता रहा पर वे लोग तो नीचे आये ही नहीं। सो वह बहुत सावधानी से पेड़ पर से नीचे उतरा और अपने घर की तरफ भाग लिया। वह तब तक नहीं रुका जब तक कि वह अपने घर सुरक्षित रूप से नहीं पहुँच गया।

इसके बाद उसने फिर अपने आपको कभी मास्टर आदमी भी नहीं कहा।

जहाँ तक इन दोनों मास्टर आदमियों का सवाल है ये अभी भी बादल में हैं और अभी तक लड़ रहे हैं। जब वे थक जाते हैं तो थोड़ा आराम कर लेते हैं पर फिर शुरू हो जाते हैं। और फिर ये लोग क्या शोर मचाते हैं, उफ़ बस पूछो मत।

कुछ लोग इसको बिजली की कड़क बोलते हैं पर अब तो तुम्हें मालूम हो गया है न कि यह क्या है – दो बेवकूफ एक दूसरे से हमेशा के लिये लड़ रहे हैं केवल यह तय करने के लिये कि मास्टर आदमी कौन है।

10 चिन्ये[32]

यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के नाइजीरिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि नाइजीरिया के एक गॉव में एक लड़की रहती थी जिसका नाम था चिन्ये। उसके माता पिता मर गये थे सो वह अपनी सौतेली मॉ निकेची[33] और सौतेली बहिन अडॉमा के साथ रहती थी।

चिन्ये की सौतेली मॉ और बहिन उससे घर का सारा काम करवाती थीं। उधर अडॉमा एक बहुत आलसी और बिगड़ी हुई लड़की थी और घर में कोई काम नहीं करती थी।

असल में उसको घर में इधर उधर घूमना और दिन में कई बार नहाना बहुत अच्छा लगता था सो वह घर का बहुत सारा पानी खर्च कर देती थी। उन दिनों पानी घरों में पास की नदी से लाया जाता था। और इस तरह से पानी लाना आसान नहीं था।

एक दिन शाम को सारा पानी खत्म हो गया और शाम का खाना बनाने के लिये बिल्कुल भी पानी नहीं था सो निकेची ने चिन्ये को पानी लाने के लिये भेजा। हालॉकि रात बहुत अँधेरी थी।

---

[32] Chinye – a fairy tale from Nigeria, Africa. Adapted from the Web Site : http://www.365cinderellas.com/search/label/Baba%20Yaga
By Obi Onyefulu and E Safarevicz. From their book “From Chinye: a west African folktale. NY: Penguin Books. 1994.

[33] Chinye lived with her stepmother Nkechi.

उसने उससे कहा — "ओ बुरी लड़की, जा ज़रा नदी पर चली जा और जल्दी से थोड़ा सा पानी ले आ।"

हालॉकि चिन्ये कोई बुरी लड़की नहीं थी पर फिर भी वह उस अँधेरी रात में नदी से पानी लाने चली गयी क्योंकि उसके पास और कोई रास्ता ही नहीं था।

जब वह नदी के आधे रास्ते में पहुँची तो एक शक्ल उसके रास्ते में आ कर खड़ी हो गयी और वह डर के मारे चीख पड़ी।

पर तभी एक मीठी सी आवाज ने उससे कहा — "बच्ची तुम कहॉ जा रही हो।" और तभी वह शक्ल उसको एक हिरन[34] में बदलती नजर आयी।

जब चिन्ये ने उसको यह बताया कि वह इतनी रात को बाहर क्यों निकली तो उस शक्ल ने एक लम्बी सी सॉस भरी और उसको जाने दिया।

चिन्ये और आगे चली। जब वह नदी की तरफ तीन चौथाई रास्ता पार कर गयी तो उसके रास्ते में एक और शक्ल दिखायी दी। वह उसको हयीना[35] लगा।

[34] Translated for the word "Antelope" – see its picture above.

[35] Hyena – is a tiger-like animal – see its picture above.

उसने भी उससे बड़ी शान्ति से पूछा — "बेटी तुम इतनी रात गये इस अँधेरी रात में जंगल के इस खतरनाक रास्ते पर अकेली कहाँ जा रही हो?"

जब चिन्ये ने उसे बताया कि वह उस समय में कहाँ और क्यों जा रही थी तो हयीना बोला — "जाओ बेटी मेरे आशीर्वाद के साथ जाओ। पर सँभाल कर जाना एक शेर मेरा पीछा कर रहा है। तुम इस पेड़ के पीछे छिप जाओ जब तक वह यहाँ से गुजरता है। उसके जाने के बाद चली जाना।"

सो चिन्ये हयीना के बताये पेड़ के पीछे छिप गयी और तब तक वहाँ खड़ी खड़ी शेर का इन्तजार करती रही जब तक वह वहाँ से निकल कर चला नहीं गया। उसके जाने के बाद वह तुरन्त ही वहाँ से निकल कर नदी की तरफ दौड़ गयी। उसके बाद उसको वहाँ कोई जानवर नहीं मिला।

चिन्ये ने अपना पानी का बरतन पानी से भरा और लौटने के लिये घूमी कि अचानक उसके सामने एक बुढ़िया आ गयी जिसकी कमर उम्र की वजह से झुकी हुई थी। यह उस नदी की आत्मा थी जिससे वह अभी अभी पानी ले कर आ रही थी।

वह बुढ़िया बोली — "भगवान तुम्हारी रक्षा करे बेटी। जब तुम यहाँ से वापस जाओगी तो तुमको जंगल की एक झोंपड़ी से आती ढोल और गाने की आवाज सुनायी देगी तो तुम उस झोंपड़ी में घुस जाना।

वहॉ तुमको उस झोंपड़ी के फर्श पर बहुत सारे खोल[36] बिखरे मिलेंगे। तुम उनमें से सबसे छोटा और चुप रहने वाला खोल उठा लेना। तुम उनमें से बड़े वाले खोल और यह कहने वाले खोल मत उठाना जो तुमसे यह कहें कि "मुझे उठा लो।"

यह कह कर और एक बार फिर से उसको आशीर्वाद दे कर नदी की आत्मा वहॉ से गायब हो गयी। अब जैसा कि नदी की आत्मा ने कहा था वैसा ही हुआ।

जब वह वापस जा रही थी तो उसने जंगल में से एक झोंपड़ी से आती ढोल और गाने की आवाज सुनी। वह उसी झोंपड़ी में चली गयी। वहॉ जा कर उसने देखा कि वहॉ तो वाकई बहुत सारे खोल पड़े हुए थे।

उनमें से कुछ की गरदनें सीधी थीं तो कुछ की गरदनें मुड़ी हुई थीं। कुछ चिन्ये के बराबर बड़े थे तो कुछ इतने छोटे थे कि वे उसकी हथेली में आ सकते थे। उसने वहॉ से सबसे छोटा खोल उठाया और उसको ले कर घर चल दी।

नदी की बुढ़िया उसके सामने फिर प्रगट हुई और बोली — "बेटी तुमने यह खोल बहुत ही अक्लमन्दी से चुना है अब जो भी

[36] Translated for the word "Gourd" – see its picture above. Gourd is dry oluter cover of a fruit which can be used to keep dry or wet things.

यह तुम्हारी किस्मत में ले कर आये उसको भी तुम अक्लमन्दी से ही इस्तेमाल करना।" और इतना कह कर वह फिर गायब हो गयी।

पर जब चिन्ये घर पहुँची तो उसकी सौतेली बहिन ने उसका वह छोटा सा खोल उसके हाथ से छीन लिया और खाना बनाने के लिये उसको रसोईघर में धकेल दिया।

सौतेली मॉ ने उसको देर से आने पर बहुत मारा और चिल्लायी — "हम शाम का खाना बनाने के लिये तेरा कबसे इन्तजार कर रहे हैं और तू अब आयी है।"

सो चिन्ये को घर पहुँच कर शाम का खाना बनाना पड़ा और फिर उन दोनों को खिलाना पड़ा। इस बीच उसको अपने लाये हुए खोल को खोलने का मौका ही नहीं मिला।

सुबह सवेरे वह अपने छोटे से काशीफल के खोल को ले कर एक खाली झोंपड़ी में चली गयी। उसने पास में से एक पत्थर उठाया और उस खोल पर मार कर उसको तोड़ दिया।

खोल के टूटते ही वह झोंपड़ी एक खजानेघर में बदल गयी। बहुत सुन्दर सुन्दर सोने के और हाथी दॉत गहने वहॉ बिखर गये और धूप में चमक उठे।

चिन्ये बहुत ही दयालु थी सो वह यह अच्छी खबर अपनी सौतेली मॉ को देने के लिये दौड़ पड़ी। यह सब देख कर तो निकेची की लालची चमकीली ऑखें खुली की खुली रह गयीं।

उसी शाम उसने अपनी आलसी बेटी अडॉमा को नदी की आत्मा को ढूँढने के लिये नदी पर भेज दिया। वह उसको वहॉ मिल गयी। उसने उस आलसी लड़की को भी वही आशीर्वाद और वही सलाह दी जो उसने चिन्ये को दी थी। पर क्या अडॉमा ने उसकी बात सुनी? नहीं।

जब वह जंगल की उस झोंपड़ी में आयी जहॉ से उसको खोल उठाने थे तो उसने जो वह ले जा सकती थी वह सबसे बड़ा खोल उठाया। उस बुढ़िया की बेवकूफी भरी सलाह पर हॅसती हॅसती वह उस खोल को किसी तरह से घसीटती घसीटती अपने घर ले गयी।

जब वह घर आयी तो निकेची बहुत खुश थी कि उसकी बेटी कितनी अक्लमन्द थी कि वह कितना बड़ा खोल लायी थी। अब तो उसमें चिन्ये के खोल से भी ज़्यादा सामान निकलेगा।

यही सोचते हुए निकेची ने अपने अपनी रसोई के सबसे बड़े चाकू से उस खोल के दो टुकड़े कर दिये। पर जब वह खोल टूटा तो उसमें से क्या निकला?

बिजली की चमक और कड़क। एक बवंडर उठने लगा। उसने उनके घर के सारे बरतन कपड़े कौड़ियॉ उठा कर बाहर अॅधेरे में फेंक दिये।

अडॉमा और निकेची अपना सामान लाने के लिये अकेली ही उसके पीछे दौड़ीं क्योंकि घमंडी होने की वजह से वे किसी से सहायता तो मॉग नहीं सकती थीं। पर अकेली होने की वजह से

उनको उनमें से कुछ भी नहीं मिल सका। बवंडर बहुत तेज़ था और वह उन सबको बहुत जल्दी ही दूर ले गया।

पर चिन्ये को नदी की आत्मा के शब्द याद थे।

उसने अपने जवाहरात और गहने आदि अपने गॉव की भलाई के लिये लगा दिये। उसके बाद चिन्ये और उसका गॉव खुशी खुशी रहे।

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com
1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com
1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com
1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शेबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।
1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on May 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**